

an>

Title: Discussion regarding situation arising out of incidents of intolerance in the country.

HON. SPEAKER: Hon. Members, I have received a notice from Shri P. Karunakaran authorising Shri Mohammad Salim to initiate the discussion on his behalf under Rule 193 regarding the situation arising out of incidents of intolerance in the country.

I am accepting it. Now, Shri Mohammad Salim please.

श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, मैं करुणाकरण जी, आपका और सदन का धन्यवाद करता हूँ कि हम इस विषय पर मर्यादित ढंग से चर्चा करेंगे। अभी गृह मंत्री जी ने जो कुछ कहा, हम पूरे देश को संदेश देना चाहते हैं, अगर हम सदन में असहिष्णुता हो जाए तो पूरे देश को सहिष्णु बनाने के लिए नहीं कह सकते। मैं आपसे अनुमति लेकर करुणाकरण जी की जगह से बोल रहा हूँ। देश में जो असहिष्णुता की स्थिति उत्पन्न हुई है उसका व्याख्यान मैं नहीं जाऊंगा। पिछले कई महीनों से हमारे देश में जिस तरह की घटनाएँ शुरू हुईं, कुछ लोग यह कहने लगे कि ये छिटपुट घटनाएँ हैं, मैं उसका खंडन करता हूँ। सदन में मंहगाई और दूसरे तमाम विषय थे, लेकिन हमने इस विषय को क्यों लिया, ये घटनाएँ छिटपुट नहीं हैं इसकी स्वीकृति सदन भी दे रहा है और आपकी कुर्सी भी दे रही है। जिस तरह से इस बारे में कहा जा रहा था वास्तव में यह वैसा नहीं है बल्कि गंभीर मामला है। यह असहिष्णु शब्द अफगान के लिहाज से कम है। देश में सहनशीलता का अभाव हो रहा है बल्कि मेजोरिटिनिज्म की टैरनी, एक विस्फोटक स्थिति इस देश में पैदा कर रही है। यही कारण है कि यह विषय केवल राजनीतिक चर्चा का विषय नहीं है, सामाजिक क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र और वैज्ञानिक सोच में भी है, जो लोग इस देश को बनाने में, उत्थान करने में अपना दिलो दिमाग लगा रहे हैं, चाहे वे व्यवसाय के क्षेत्र में हों, इस संकट की स्थिति में सबने अपना विचार रखने की कोशिश की है। आज असहिष्णुता और स्पॉट हो रही है Democracy is all about debate, discussion and dissent. लेकिन कोई आपकी बातें हैं, जो कारनामे हैं, उनसे हम सहमत नहीं हैं हमें लोकतंत्र में यह अधिकार है। मंत्री महोदय कहते हैं कि मैनुस्क्रिप्ट डिसेंट है, मैनुस्क्रिप्ट डिसेंट, आप किसको अपमानित कर रहे हैं, श्री सी.एन. राव, श्री भार्गव, श्री नायडू, एक के बाद एक फेडरिस्ट लंबी होती गई। यह सब एक दिन में नहीं हुआ, हम क्या कह रहे थे? हमारे ऊपर तांछन लगाने की कोशिश की गई, आप देश का अपमान कर रहे हैं, देश को असहिष्णु कह रहे हो, वह मैनुस्क्रिप्ट हो रहा था, सवाल देश का नहीं है, देश बहुत बड़ा है, ग्रेण्ड इन्टेलेंस बढ़ती गई, सहिष्णुता का मतलब है कि हमारी देश की परंपरा, संस्कृति, हमारी धरोहर, हमारी सभ्यता सहनशीलता सिखाती है, जो कहीं न कहीं डिपार्चर हो रहा है, हम मुड़ रहे हैं और तेज रफतार से मुड़ रहे हैं। चारों तरफ से सिग्नल दिखाने की धीरे-धीरे कोशिश की गई। अभी हमने संविधान के बारे में चर्चा की। बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर जी की 125वीं जयंती के अवसर पर विचार किया। मैं उसे दोहराना नहीं चाहता।

हमारा संविधान कोई हाथी के ओहदे पर बैठकर यात्रा करने के लिए नहीं है। हमारी यात्रा किस रूप में हो, उसे दिखाने के लिए है, उसकी दिशा दिखाने के लिए है। हमारा संविधान हर नागरिक को फ्रीडम ऑफ़ स्पीच का अधिकार देता है। यह कोई फासिस्ट स्टेट नहीं है। यह लोकतांत्रिक स्टेट है। हमने संविधान की चर्चा पर बहुत भाषाण सुने। संविधान का गूँथ, चंद बहुत बुद्धिमान लोग जो संविधान पंडित हैं, उनका बहुत कंटीब्यूशन है। लेकिन उन्होंने कांस्टीट्यूशन असेम्बली में बैठकर किताब नहीं लिखी। हमारी हज़ारों साल की सभ्यता के बुनियाद पर लिखी है। दो सौ साल आजादी की लड़ाई से यह मिली। हमें अफसोस है कि जब प्रधान मंत्री जी बोले, जब गृह मंत्री जी बोले, तो हमारी आजादी की लड़ाई, एंटी कम्युनल जो मूवमेंट था, चाहे वह अहिंसा के रास्ते से हो, सहिष्णुता के रास्ते से हो, 1857 का गदर हो या विरसा मुंडा का आंदोलन हो... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : गदर नहीं, स्वातंत्र्य संग्राम था। 1857 का स्वातंत्र्य संग्राम है, उसे गदर नहीं बोलते।

श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) : गदर मूवमेंट हुआ। ... (व्यवधान) ठीक है, गदर वह बोलते हैं। हम पहले आजादी की लड़ाई बोलते हैं। लेकिन पंजाबी में हमारा गदर मूवमेंट है। वह गदरइज्ड है, वह गदरी बाबा हैं। अंग्रेज गदर को एक तरह से देखते हैं और हम वामपंथी दूसरी नजर से देखते हैं। विद्रोह भी एक इंकलाबी शब्द है। यह रिपेडियनशिप नहीं है, नहीं तो गदरी बाबा देश के बाहर जाकर भी इतनी परेशानी में अपनी जान नहीं देते। ... (व्यवधान) आज वह हमारा विषय नहीं है। लेकिन मैं बोल रहा हूँ कि उसकी एक कन्टीन्यूटी है। जब लोग देखें, तो उसका कहीं न कहीं ब्रेक हो रहा है। चूंकि कुछ लोग यह बोलते कि वया पहले नहीं हुआ? अच्छा, 1984 में नहीं हुआ? अच्छा, 1977 में नहीं हुआ? ... (व्यवधान) एक कहानी है कि एक भेडिया बकरी को बोल रहा है कि तुम पानी झूठा कर रहे हो। उसके बाद उसने कहा कि तुम नहीं, तो तुम्हारे बाप-दादा ने किया होगा। What about your grandfathers?

यहां आडवाणी जी बैठे हुए हैं। सुधींद्र कुलकर्णी, मैं उनका नाम इसलिए बोल रहा हूँ कि वे एक वक्त भारतीय जनता पार्टी की कार्यकारिणी के सदस्य थे। बहुत से ऐसे नाम आरेंगे। वे सदन के सदस्य नहीं हैं। इन सब लोगों ने घर के अंदर से वार्निंग दी। मैं वार्निंग की बात कर रहा हूँ। लेकिन अफसोस इस बात का है कि जो हर विषय पर टीवी करते हैं, जो ग्रेट ओरेटर हैं, जिन्हें देश के लोगों ने बहुत आशा से देश का नेता चुना, सिर्फ सरकार का नेता नहीं चुना। पूरे विश्व के सामने देश को एक सम्मान की जगह पर ले जाएंगे, ऐसी उम्मीद की गयी। विकास पड़ना मुड़ा होगा, सबका साथ होगा। आपको याद है कि पहले दिन जब पूरे में सिड्डीकी टेक्नोलॉजिस्ट की हत्या हुई, तो लोग इंतजार कर रहे थे कि टीवी हो। जब जन्मदिवस पर होता है, कुर्ते या कोट पर होता है, तो कम से कम उस पर भी होना चाहिए था। खैर, एक आध विषय नहीं है। दादरी कांड हुआ। उससे पहले कलबुर्गी की हत्या हुई, पंसार की हत्या हुई। उससे पहले दाबोलकर की हत्या हुई। आज हम यह चर्चा किसलिए कर रहे हैं? We want a rationale India. We want a secular India. This is not the making of a day. यह एक दिन में नहीं होता। सभ्यता एक दिन में नहीं बनती।

सरकारें आती-जाती हैं। हम सब यहां किशोरा हैं। कोई यहां का मालिक नहीं है। आपने पांच साल के लिए एक कार्यक्रम जनता के सामने अपनी तरफ से दिया, जिसे भारी संख्या में लोगों ने सारा। यही तो लोकतंत्र की ब्यूटी है। वहां पर हमने यह देखा कि कहीं न कहीं, जब एनडीए की सरकार थी, उस समय हम डिडन एजेंडा कहते थे, तो लोग कहते थे कि डिडन एजेंडा क्या है? अभी डिडन एजेंडा नहीं है, सब कुछ सुलतमसुलता है, सब कुछ दिखता है। हमने सरकार से ट्रांसपैरेंसी मांगी थी, काले धन की वापसी, भ्रष्टाचार खत्म। कहा गया फ़िर्ज एलीमेंट्स। पहले कहा गया छुटपुट, फिर कहा गया फ़िर्ज एलीमेंट्स। कौन से फ़िर्ज एलीमेंट्स? सदन के सदस्य, मंत्रिमंडल के सदस्य? दलित बच्चे की हत्या होती है, जांच करके देखा जाएगा। लेकिन सवाल है कि हमारी यह कौन सी संस्कृति है कि जब मुसलमान या दलित की बात आएगी तो फुत्ते का पिल्ला याद आ जाएगा एनोलांजी में। यह तो इंसानियत के खिलाफ है, यह धर्म का मामला नहीं है। समझदारों के लिए इशारा ही काफी है, अभी मैं बोल रहा हूँ, मैं सहनशीलता की बात कह रहा हूँ, हमें ऐसे मंत्री को भी सहन करना पड़ रहा है, झेलना पड़ रहा है। ... (व्यवधान) बात यह थी कि जो हमारे प्रांत में हैं, गरीब, दलित, आदिवासी, पिछड़े, अपाहिज, को किस तरह से मेन स्ट्रीम में ले जाएं। आजादी के बाद तो यही सबसे बड़ी सोच है। हमारे संविधान ने यही निर्देश दिया है कि हम इन्हें मुख्यधारा में ले जाएं। कहां से फ़िर्ज एलीमेंट्स नया तैयार हो गया? ये फ़िर्ज एलीमेंट्स नहीं हैं, हब एंड स्पोक कन्सेप्ट है, जैसे बिजनेस प्रोपोजिशन में होता है जैसे राजनीतिक प्रोजेक्ट में हो रहा है। हम सामोश हैं और स्पोक चक्कर लगा रहा है। पूरे देश में संदेश वया जाता है? रविन्द्रनाथ टैगोर जी की बात यहां बार-बार की जाती है, मैं बंगाल से आता हूँ।

ओन्नाय जे कोरे, ओन्नाय जे शोदे,

तोबो घना जेनो तरे तूनोशोमो दोदे।

जो अन्याय करता है और जो अन्याय सहता है, दोनों एक समान हैं, दोनों का अपराध समान होता है। कोई सहन नहीं करना चाहता है, चाहे कोई राइटर हो, शायर हो, अपना सम्मान, पूरी जिंदगी की कमाई वापस कर रहे हैं और हम उनकी सोशल मीडिया, अखाबार, प्रेस कॉन्फ्रेंस में धजियां उड़ा रहे हैं। हमेशा हर दौर में ऐसा हुआ है, राजा रजवाड़ों के दौर में हुआ है जब लोकतंत्र नहीं था। सब विद्रोहक नहीं होते, सब साइकोफेण्ड्स नहीं होते। आप टाइम्स स्कवेयर की आवाज सुन सकते हैं और इस समय की बात नहीं सुन सकते कि हिंदुस्तान में क्या हो रहा है, कंट्रोल अफेयर्स में क्या हो रहा है? यह सुनना जरूरी है, इसके लिए जमीन पर कान लगाने की जरूरत नहीं होती है, थोड़ी आउटगोइंग कॉल के साथ इनकॉमिंग कॉल भी रखनी चाहिए कि क्या कॉल आ रही है। अगर एक ही मोड में होगा तो दिक्कत हो जाएगी। मुझे ऐसा लगा कि आउटगोइंग कॉल तो है, मन की बात हो रही है, धन की बात हो रही है, तन की बात हो रही है लेकिन देश का मन क्या बोल रहा है, कहां दहल रहा है, यह बात सामने नहीं आ रही है। उसके लिए बिहार के चुनाव की जरूरत हो गई? उसके लिए चुनाव के नतीजे का इंतजार करना पड़ा? क्या हम यहां बहस करने इसलिए आए थे? यह सवाल नहीं था, सवाल था कि दाल क्यों 200 रुपए कितो हो गई? प्याज क्यों 70-80 रुपए कितो हो गया? एक व्यापारी सत्ता के नलियारे के करीब होने के कारण क्यों देश की सारी दाल गौदाम में भर लेना और दाल की कीमत से करोड़ों रुपए का फायदा हो जाएगा? सवाल यह नहीं है कि किसके घर में क्या खाना पक रहा है, छोटे का है या बड़े का है, बकरे का है या गाय का है? सरकार की

जिम्मेदारी, राजनीति की जिम्मेदारी, राजनैतिक संगठन की जिम्मेदारी, सांस्कृतिक संगठन की जिम्मेदारी यह नहीं है कि हम मछली पका रहे हैं या नहीं पका रहे हैं या कुछ नहीं पका रहे हैं? हम रोडु पका रहे हैं या हित्सा बना रहे हैं? सवाल यह है कि इस देश में जिसका वृद्ध नहीं जल रहा है, जिसकी हांडी में खाना नहीं है, सरकार को उसकी तरफ देखना पड़ेगा, राजनीति को उसकी तरफ देखना पड़ेगा। हम मुद्दे को बदल रहे हैं। सवाल खाल सुरक्षा का था ताकि हर गरीब को भरपेट खाना मिले, बेरोजगार को काम मिले, मंहगाई थोड़ी कम हो, मैनरिशमेंट कम हो, कुपोषण के शिकार बच्चों को पोषितक आहार दिया जाए। इसके बजाय अख्ताक अहमद को मारना पड़ा, कुर्बानी का बकरा बनाना पड़ा, कुर्बानी के बाद उसके घर तथा खाना बना। हमें लज्जा आनी चाहिए कि उसका बेटा जो भारत की एयर फोर्स में है, मैंने मीडिया में देखा, उसके बावजूद भी लोग कहते हैं कि क्या करेंगे, कुछ कहते हैं कि इधर चले जाओ, उधर चले जाओ, वह सर्फरोश कहता है कि "सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।" That's the spirit of India. यह एक चुनाव के आंकड़े से बदलता नहीं है। यह एक सरकार के कहने से नहीं होता है। ये सदियों का है। कहां से हिम्मत मिली? ये फ्लूज एलीमेंट्स सेंटर में कैसे आ गये? गृह मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं। मैं दूसरे मंत्री के नाम से पहले गृह मंत्री से शुरु करना चाहता हूं। संविधान का मामला भी उनके विभाग का है। जब चुनाव के बाद मोदी जी सत्ता में आए, भाषाण में क्या कहा गया- ...□ क्या यह लोक तंत्र की दुहाई है? क्या यह सैकुलरिज्म की दुहाई है? क्या यह संविधान की दुहाई है? किसकी ओर इशारा कर रहे हैं? I can quote: I quote: ...* जब आप इलैक्शन की विवट्री के बाद ...(व्यवधान) गृह मंत्री जी बोले।...(व्यवधान)

श्री गणेश सिंह (सतना) : कौन बोले? कब बोले? ...(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : क्या आपको मुझे ऑडियो वर्जन देना पड़ेगा? अच्छा है, वे खड़े होकर बोल दें कि हम ऐसा नहीं बोले। फिर बाकी हम देखेंगे। वे खड़े होकर बोल दें।...(व्यवधान)

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह) : माननीय अध्यक्ष जी, मोहम्मद सलीम जी बहुत पुराने हमारे मित्र हैं और उन्होंने मेरे ऊपर बहुत ही गंभीर आरोप लगाया है। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि मैंने ये सब कहां बोला है? मैंने किस अवसर पर ये बोला है? ये पूरे सदन को बताएं अथवा उन्हें सदन के सामने क्षमा-याचना करनी होगी। ऐसे आरोप नहीं लगाने चाहिए।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है।

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : अच्छी बात है, अगर ये नहीं बोलते हैं। मैं तो वॉलेंट दे रहा हूँ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : नहीं, नहीं, ऐसे नहीं है। क्या उन्होंने ऐसा कहा?

â€!(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : इन्होंने कहीं से पढ़ा है। I am sorry. क्या आपने कहीं से पढ़ा है?

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : हां। मैं तो बोल रहा हूँ। मैं तो चुनौती दे रहा हूँ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : उनको बोलने दीजिए।

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : संघ परिवार की बैठक में...(व्यवधान) आपका निवेदन था। मैं इस तकरार में जाकर इस बहस को मारना नहीं चाहता। गृह मंत्री जी ने कहा कि यह ...□ साल का सवाल उन्होंने नहीं बोला, जो मैंने कहा, वह मैं रिपीट नहीं करना चाहता।...(व्यवधान) मैं कह रहा हूँ कि जब मीडिया में उस ...(व्यवधान) उस सम्मान के कार्यक्रम के बाद मीडिया में रिपोर्ट आई, गृह मंत्री हैं, ...(व्यवधान) तो वो उसके खिलाफ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए। मैं यहां बैठी हूँ। वे उनका जवाब देंगे। प्लीज, आप बैठिए।

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : This is the tyranny of majority. ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आदित्यनाथ जी, एक मिनट बैठिए। मोहम्मद सलीम जी, क्या आपने ये कहा करके आपने किसी रेफरेंस में ये पढ़ा और वह वक्तव्य आपने कहा कि गृह मंत्री का है? गृह मंत्री ने आपसे पूछा कि कब और क्या कहा? वह आप बताओ। उन्होंने कब कहा?

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : कवर पेज है। November 16 issue of `Outlook' - Pakistanisation of India. ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप एक मिनट के लिए बैठ जाएं।

â€!(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : आप इसका खंडन यहां कीजिए। I want to see; you write a letter to the Editor. The writer of the article is Mr. Pranay Sharma....(व्यवधान) वे आर्थेटिक रिपोर्ट करते हैं।...(व्यवधान) मैंने यह नहीं कहा है कि आपने यह सदन में कहा है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : गृह मंत्री जी ने जो कहा है, उसका उत्तर दीजिए।

â€!(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मोहम्मद सलीम जी, ऐसा मत कीजिए। मैंने शुरू में ही कहा था इसलिए कि हर कोई जिम्मेदारी से, आपने कोट करके कहा कि ये उनके वाक्य हैं। आप मेरी पूरी बात सुनिए क्योंकि मुझे आपको भी संरक्षण देना है और उन्हें भी संरक्षण देना है। मैंने आपको बोलने का मौका दिया। गृह मंत्री जी ने आपसे पूछा कि कब कहा, कौन-सी सभा में कहा। आपने केवल वाक्य कोट किया है। उनका कहना है कि उन्होंने नहीं कहा है। कौन-सी सभा में कहा है, यह भी आपको बताना चाहिए। नहीं तो आरोप नहीं लगाना चाहिए। आप देश के गृह मंत्री पर आरोप लगा रहे हैं, संसद में लगा रहे हैं।

श्री मोहम्मद सलीम : महोदय, अब तक मेरा दुर्भाग्य नहीं हुआ कि मैं आरएसएस की बैठक में उपस्थित हुआ।...(व्यवधान) मैं सत्वाई बता रहा हूँ मैं आरएसएस की बैठक में नहीं बैठा हूँ। क्या आपको इस पर भी आपत्ति है? ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप क्लीयर कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप गृह मंत्री जी की बात क्लीयर कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : ये तमाम संगठन हैं और इनकी जो कार्यवाही होती है, उसकी कार्यकारिणी हमारे पास नहीं आती है लेकिन टेलीविजन में, अखबार में रिपोर्ट आती है, फोटोज़ आते हैं, दुनिया की जो नम्बर वन मैगजीन्स हैं, उनमें से एक मैगजीन "आउट लुक" से मैंने कोट किया है।... (व्यवधान) राजनाथ जी हमारे पुराने मित्र हैं, मैं उनका सत्कार करता हूँ और वे उठकर कहें कि उन्होंने ऐसा नहीं कहा है।... (व्यवधान) I want to see the Home Ministry send a notice to this correspondent कि तुमने गलत बयान क्यों दिया, जिसकी वजह से इतनी झड़प हो गई।... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Is it there on his name?

श्री मोहम्मद सलीम : अगर यह गलत बात है, तो खंडन कीजिए।... (व्यवधान)

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Madam Speaker, there are certain rules which this House has framed. If I am going to accuse any Member in this House, I have to give notice. I am only saying, please follow the rules when we are debating. We cannot be prejudiced. I would like to know whether any notice has been given to you. If I am going to accuse anyone of them, I have to give notice in advance. ... (Interruptions) I am not going into that aspect. But there is a specific rule. Rule 352 (ii) and Rule 353 may be looked into. Rule 352 (ii) says:

"make personal reference by way of making an allegation imputing a motive to or questioning the *bona fides* of any other member of the House..."

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record except what Shri Bhartruhari Mahtab says.

...(Interruptions)â€¦

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB: Madam, Rule 353 says:

"No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any person unless the member has given adequate advance notice to the Speakerâ€¦"

...(Interruptions)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA (GUNA): Who is making an allegation here? ... (Interruptions)

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : Madam, Mr. Scindia is more educated, he understands English much better. But I am only referring to the Rule Book. My only submission is, we are in a very important discussion. Let us follow the rules. I think, Madam, you have to bring this House in order as per the rules that have been framed.... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : मेरा मो. सलीम जी से यही कहना था क्योंकि यहीं आमने-सामने बात हुई है। मेरे वाक्य को भी आप ध्यान में रखें। देश के गृह मंत्री पर आपने एक प्रकार से कुछ आरोप लगाये, उन्होंने भी खड़े होकर आपसे कहा कि मैंने यह नहीं बोला है, आप स्थान, समय बताएं। अब उसमें भी ऐसा लिखा है कि गृह मंत्री ने यह बोला; whether that reporter has said something like that what you are quoting. एक बात ऐसी भी है कि उस पर से कोट करके आप बोलेंगे, उसके लिए भी आपको पहले, what he is saying is also correct, नोटिस देना पड़ेगा।... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : आपका कहना सही है। गृह मंत्री भी खड़े होकर बोले कि हम यह नहीं बोले हैं। दूसरी बात, मैं व्यक्तिगत रूप से या राजनीतिक रूप से... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : उसमें यह लिखा है कि गृह मंत्री ने बोला है।

â€¦(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : सुन लीजिए, मैं बोल रहा हूँ। ... (व्यवधान) I will show you. ... (Interruptions) The reporter has said: "The current strife is uncharted territory. It has the imprimatur of the" (to quote Union Home Minister Rajnath Singh on Modi's election victory). ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Who said it?

...(Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम : पूरे देश ने सुना है कि पृथ्वीराज चौहान के बाद पहली बार हमारे देश में शासन में... (व्यवधान) इंडियन होम मिनिस्टर कौन हैं? ... (व्यवधान) मैं तो कोट कर रहा हूँ। ... (Interruptions) I will lay it. Madam, you allow me.... (Interruptions) Let the Parliament take cognizance of this why such things are going on in the name of the Home Minister. I also want to know that. ... (Interruptions) मैं जानना चाहता हूँ। ... (व्यवधान) I will lay it.... (Interruptions) I will authenticate.... (Interruptions) मैं भी रूट्स जानता हूँ।... (व्यवधान) If I am quoting something from a paper, I will authenticate and submit it to the hon. House. You allow me to do this.... (Interruptions) I will authenticate and submit it. This is what I am saying. I know the rules.... (Interruptions)

HON. SPEAKER: This is not proper.

...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आज ऐसे ही बहुत-से प्रसंग आएंगे।

...(Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम : इसे पूरा विश्व पढ़ रहा है। ... (व्यवधान) मैंने इसमें एक शब्द भी नहीं जोड़ा है।

HON. SPEAKER: Prof. Saugata Roy ji, do you want to say something?

PROF. SAUGATA ROY(DUM DUM) : Madam, it is true that if some Member levels an allegation against a Minister or a Member, he has to give a previous notice with authentication. That is the normal rule which was quoted: Rule 352 (2)....(Interruptions)

HON. SPEAKER: Rightly also.

PROF. SAUGATA ROY: It was quoted by Shri Bhartruhari Mahtab....(Interruptions) It is true and it is correct. But the other point is that this is an issue of Outlook dated 16th November. So, two weeks have elapsed since then. Outlook is a major magazine in the country. If it was not true, the Home Minister should have taken note and issued a denial letter to Outlook which, he being the Home Minister, would have been published all over the country....(Interruptions) Why did the Home Minister not do that, is a question. So, whether Mr. Salim is right or wrong, the Home Minister did not object that he had called Narendra Modi the first Hindu ruler after Prithviraj Chauhan. Now, that point he has to clarify. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: That is why, he has also clarified and he has also clarified.

PROF. SAUGATA ROY : He simply has not done that. That is why his defense is not warranted. That is all I want to say. हर मंत्री का नाम बोलेंगे, कुछ न कुछ निकल आएगा दस्तावेज....(व्यवधान)

SHRIMATI MEENAKASHI LEKHI (NEW DELHI): Madam Speaker, this is a matter of breach of privilege. ... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आप जब बोलेंगी, तब इसके बारे में बोलिए।

श्री मोहम्मद सलीम : आपने अल्फा कहा है मैडम, मेरे कुछ और भी प्वाइंट्स थे, अब मैं उन पर नहीं बोल रहा हूँ।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : संसदीय कार्यमंत्री जी इसी के संदर्भ में कुछ कह रहे हैं।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजीव प्रताप रूडी): मैडम, हम लोगों ने पहले से तय किया था कि इस तरह की चर्चा में किसी प्रकार की ऐसी टिप्पणी या आरोप नहीं लगाएंगे, जिसके कारण वातावरण खराब हो।

माननीय अध्यक्ष : बोला है, वह रिप्लेस्ट है।

श्री राजीव प्रताप रूडी: महोदया, उन्होंने जो चर्चा की है और जिस प्रकार का संवाद पूरे देश में पहुंचाने का प्रयास किया है कि देश के गृहमंत्री ने इस प्रकार का बयान दिया है, जबकि देश के गृहमंत्री ने स्पष्ट किया है कि इस प्रकार का कोई बयान उन्होंने नहीं दिया है। यदि आप चाहते हैं कि सदन ठीक से चले तो जब तक इस तथ्य की सत्यता प्रमाणित नहीं हो, इस बयान को माननीय सदस्य वापस लें ताकि हम सदन की कार्यवाही को चला सकें। जब तक इसकी सत्यता प्रमाणित नहीं होती है, तब तक माननीय सदस्य इस वक्तव्य को वापस ले लें ताकि सदन ठीक प्रकार से चले, अन्यथा इस प्रकार का आरोप, जो पूरा देश देख रहा है, पूरे देश को एक ऐसे वातावरण में घकेलेगा जो सबके लिए खतरनाक हो सकता है। यह एक ऐसा बयान है जो देश के लिए खतरनाक हो सकता है। सदन की कार्यवाही के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के बयान से परहेज करते हुए, अभी उस टिप्पणी को अलग रखें, तब तक उसकी सत्यता प्रमाणित न हो जाए। मेरा यह आग्रह है कि अगर आपको सदन चलाना है तो मेरा सरकार की तरफ से आग्रह है कि इस प्रकार के बयान न दें। हम उनकी बात सुन चुके हैं, देश भी सुन चुका है, लेकिन देश में इस प्रकार का वातावरण न बने कि देश के गृहमंत्री ने इस प्रकार का बयान दिया है, हमारा माननीय सदस्य से यही आग्रह है कि आप इस बयान की सत्यता प्रमाणित होने तक स्वयं को इस बयान से अलग कर लें या विद्वंद्वं कर लें, सदन आपकी बात सुनने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

माननीय अध्यक्ष : वह नियम ही बोल रहे हैं।

श्री राजीव प्रताप रूडी: इस बयान को उनको अलग रखना पड़ेगा, जब तक इसकी सत्यता प्रमाणित न हो जाए। अगर यह बात कर लें तो हम सामान्य रूप से सुन सकेंगे, अन्यथा इस आरोप के बाद हमारे लिए इस सदन में बैठे रहना कठिन होगा।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप लोग बोलें।

â€ (व्यवधान)

SHRI MOHAMMAD SALIM : Madam, the whole country is watching us. We have to be sober. ... (Interruptions)

SHRI RAJIV PRATAP RUDY: You cannot make a statement against the Home Minister who has categorically refuted it. You are trying to hold it....(Interruptions) You have to withdraw your sentence till the fact is found out. ... (Interruptions) Hon. Member has to withdraw his sentence and then continue. ... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आप क्या बोल रहे हैं?

SHRI MOHAMMAD SALIM : Madam, I would like to read Rule 352 (ii) together with 349. Rule 352 (ii):-

"Personal reference by way of making an allegation imputing a motive to or questioning the *bona fides* of any other member of the House unless it be imperatively necessary for the purpose of the debate being itself a matter in issue or relevant thereto; "

The issue is 'growing intolerance' और उससे उत्पन्न स्थिति। हमने कहा कि यह फ्रिज एलिमेंट्स का मामला नहीं है, and come to the hub, मेन जगह पर आओ।... (व्यवधान) उस पर अगर कोई कहे तो उस पर कार्रवाई हो, मेरे ऊपर भी हो। I am ready for that. ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने भी, जैसा भट्टरि महताब जी ने भी कुछ प्वाइंट ऑफ ऑर्डर उठाया है, आपकी बातों पर माननीय गृहमंत्री जी ने भी कुछ बातें कही हैं, आपने भी कुछ कागज ऑर्थेटिकेट करके दिया है, इन सभी को I will have to see. यह होने के बाद ही मैं कुछ बात करूँगी। अभी आप कंटीन्यू कीजिए।

â€ (व्यवधान)

HON. SPEAKER: I will have to see all these things.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: I will have to examine it and then I can give any ruling but not before that.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: I will have to examine it और तब तक आपके ये शब्द रिकॉर्ड में नहीं जाएंगे। I will have to examine it, that is what I am saying.

श्री राजनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदया, श्री मोहम्मद सलीम जी ने जो कुछ भी कहा है, उससे मैं आहत हूँ। मैं यह भी बतलाना चाहता हूँ कि मेरे संसदीय जीवन में आज जितना मैं आहत हुआ हूँ, अध्यक्ष महोदया, अपने जीवन में कभी उतना आहत नहीं हुआ हूँ। मैं समझता हूँ इस प्रकार का स्टेटमेंट यदि कोई मूढमंती देता है तो उस मूढमंती को अपने पद पर बने रहने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। अध्यक्ष महोदया, मैं आपका संरक्षण चाहता हूँ। मैं इससे बहुत आहत हुआ हूँ। इस सदन के सारे सम्मानित सदस्य जानते हैं, केवल सदन के सदस्य ही नहीं, हिन्दुस्तान की मॉडनरिटी कम्यूनिटीज के इंसान भी जानते हैं कि राजनाथ सिंह इस प्रकार के स्टेटमेंट कभी नहीं दे सकते। मैं बराबर जब बोलता हूँ, सोच-समझकर बोलता हूँ, नाप-तौल कर बोलता हूँ। मैं आहत हुआ हूँ, अध्यक्ष महोदया, मैं आपका संरक्षण चाहता हूँ।

13.00 hours

माननीय अध्यक्ष : मैंने इसीलिए कहा है कि जो भी कुछ बोला गया है, उसको मैंने रिकॉर्ड में नहीं रखा है। दूसरा, मैंने कहा था कि उस रूल के अनुसार नोटिस देना चाहिए। तीसरी बात यह है कि माननीय गृह मंत्री जी ने यह बात कही है कि उन्होंने नहीं बोला है। आपने किसी एक पत्रिका की बात को अंतिमिक मानकर रखा है। So, I will have to examine it. मैंने पहले भी बोला था कि देश के गृह मंत्री पर इस तरह के आरोप लगाना, जिसके बारे में मैंने शुरुआत में भी बोला था, ध्यान रखने की आवश्यकता है। So, I will have to see it. आज यह बात रिकॉर्ड पर कहीं नहीं रहेगी, कहीं भी नहीं रहेगी। हम सभी लोग बोलते समय सावधानी से बोलें। भर्तृहरि महताब जी ने बिलकुल सही कहा है कि उस रूल के अनुसार हम लोग येज उठ कर एक-दूसरे पर आरोप लगाएं, वह भी विटआउट नोटिस, यह ठीक नहीं है। इससे हम पूरी चर्चा में बचें ताकि बार-बार हमें रूल की किताब हाथ में नहीं लेनी पड़े।

श्री गणेश सिंह (सतना) : महोदया, बहस आगे बढ़ाने से पहले, उनको माफी तो मांगनी पड़ेगी।...(व्यवधान)

अब जब गृह मंत्री जी ने स्पष्ट रूप से बोल दिया है।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: He has agreed.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Shri Mohammad Salim, I think, you have also agreed. आपने भी कहा है।

श्री मोहम्मद सलीम : मैडम, रूल की बात हो रही है। रूल 349 (ii) है, मैं आपका संरक्षण चाहता हूँ।

I quote Rule 349 (ii). It says:

"A member shall not interrupt any member while speaking by disorderly expression or noises in any other disorderly manner; â€."

माननीय अध्यक्ष : गृह मंत्री जी ने कह दिया है कि उन्होंने नहीं कहा है।

â€(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Let him speak.

â€(व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : मेरी ऐसी कोई मंशा नहीं है। मैं 25 साल से ज्यादा समय से सांसद रहा हूँ। मैंने कभी किसी के नाम पर कोई प्रिवीलेज नोटिस नहीं दिया है, चाहे इस सदन में हो या दूसरे सदन में हो। न कभी किसी पर कोई लाइन लगाया है।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please sit down.

Shri Mohammad Salim, please continue. The interruptions will not go on record.

...(Interruptions)â€

श्री मोहम्मद सलीम : न कभी किसी पर लाइन लगाया है।...(व्यवधान) मंत्री महोदय ने कहा कि वे आहत हुए हैं। उनको आहत करने में मेरा कोई कुसूर नहीं है, मैं क्यों उनको आहत करूँगा? जिस काम को सेन्ट्रल आईबी को, पुलिस विभाग को और खुफिया एजेंसियों को करना चाहिए था कि आपका नाम इस तरह के आर्टिकल में लिखा है। उस काम को मैंने कर दिया है और उसे आपकी नज़र में इस सदन के ज़रिए ले आया हूँ।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप जल्दी अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री मोहम्मद सलीम : इसके बाद आसन से आपने जो निर्देश दिया है, मैं उसको मानता हूँ। मेरी बात के बारे में आपने कहा, मंत्री जी ने भी कहा है, उसके बाद मैंने उसको छोड़ दिया। आपने कहा कि दोनों बातों को मैंने रिकॉर्ड में नहीं रखा। आप चर्चा करेंगे और सरकार की तरफ से भी इस बात को देखा जाएगा। हम भी कोशिश करेंगे।

माननीय अध्यक्ष : आप भी गृह मंत्री जी पर विश्वास रखेंगे।

श्री मोहम्मद सलीम : बिलकुल। दादरी कांड के बाद जब सरकार चुप थी तब होम मिनिस्टर जी ने ही सबसे पहले लोगों को आश्चर्य करने के लिए बयान दिया था। हम उनको आहत नहीं कर रहे हैं। हम उन पर कोई लाइन नहीं लगा रहे हैं। लेकिन यदि आउटलुक मेगजीन में ऐसा निकलता है तो पूरे विश्व का आउटलुक मंत्री महोदय के बारे में ऐसा बन जाएगा और ऐसा हम नहीं चाहते हैं। मेरा

ऐसा आउटलुक नहीं है। जब इन्होंने कहा कि आपने कहां से बोला तो मैंने कहा कि आउटलुक पत्रिका से कोट किया और वह हमारा अधिकार है। आप उसको देख सकते हैं।... (व्यवधान) आसन से जो कहा गया है, वह मेरे सिर माथे पर। मैं सब की बात नहीं सुनूंगा।... (व्यवधान)

DR. KIRIT SOMAIYA (MUMBAI NORTH EAST): Madam Speaker, he must withdraw his statement. ... (Interruptions) He is not withdrawing his statement. He must withdraw his statement. ... (Interruptions)

SHRI RAJIV PRATAP RUDY: Madam, my only submission is that a statement has been made by Shri Mohammad Salim. Till the authenticity of this statement or this instance is verified, he should withdraw it. That is what we are saying, and then he can carry on. That is so simple. I am saying it so simply.... (Interruptions)

SHRI P. KARUNAKARAN (KASARGOD): He is ready to obey the Chair... (Interruptions) It is not the verdict that the Chair has given... (Interruptions)

HON. SPEAKER: I understand.

... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : मेरा इतना ही कहना है अगर आप सोचो तो मो. सलीम जी की यह बात भी ठीक होगी कि अगर आपकी बात पर या आपने किसी संदर्भ में जो स्टेटमेंट पढ़ा है और जब गृह मंत्री जी ने कुछ कहा है कि he has not said something, तो फिर आपको गृह मंत्री पर विश्वास रखकर उसे वापस लेना चाहिए, मुझे लगता है कि उसमें भी चर्चा चलेगी if he is saying and if you have anything. When he is denying it, तो बात बनती है।

श्री मोहम्मद सलीम : वया मैं कोई मनगढ़ंत बात कर रहा हूं, मैंने कहा कि इस मैगज़ीन से मैं कोट कर रहा हूं ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने खुद तो नहीं सुना है।

â€! (व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : वह बयान गलत है... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपने तो नहीं सुना है।

â€! (व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : तो कर लो, मैं खाड़ा हूं, वया करोगे, वया मुझे फांसी पर चढ़ाओगे, सूली पर चढ़ाओगे... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Hon. Members, please. I am sorry, this is not the way.

... (Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम : चढ़ाओ सूली पर चढ़ाओ।

माननीय अध्यक्ष : यह ऐसे नहीं चलेगा। I am sorry.

â€! (व्यवधान)

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 14.05 hours.

13.06 hours

The Lok Sabha then adjourned till Five Minutes past Fourteen of the Clock.

14.05 hours

The Lok Sabha reassembled at Five Minutes

past Fourteen of the Clock

(Hon. Deputy Speaker in the Chair)

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजीव प्रताप रूडी): उपाध्यक्ष महोदय, जिस विधाय को ले कर चर्चा चल रही थी, उसमें मो. सलीम साहब ने देश के गृह मंत्री के बारे में एक टिप्पणी की और उन्होंने एक अखबार का रेफरेंस देते हुए उस विधाय को कहा था। उसके बाद उन्होंने कागज़ को ऑथेंटिकेट किया और कहा कि यह कागज़ है। स्पीकर महोदय ने इस पूरे विधाय का संज्ञान लिया है। मो. सलीम द्वारा जो तथ्य रखे गए थे वे सर्वविदित हैं और गृह मंत्री जी ने भी कहा है कि यह बिल्कुल गलत है। उन्होंने जिस प्रकार से विधाय को रखा है और मैं ऐसा समझता हूँ कि इस बीच में मो. सलीम साहब ने भी अध्ययन कर लिया है। हमारा उनसे अभी आग्रह है कि यह विधाय अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण है। जब तक उस बात की सत्यता प्रामाणित नहीं हो जाती है, उस बयान को वापस ले लें तो हमें कोई कठिनाई नहीं है, सदन की कार्यवाही सामान्य रूप से चल सकेगी। माननीय सदस्य से मेरा फिर से आग्रह है कि आपने जो विधाय रखा माननीय गृहमंत्री जी ने उसे स्पष्ट तौर से कहा है कि यह मैंने नहीं कहा है। जब देश के गृहमंत्री ने यह वक्तव्य आपके और सदन के समक्ष रखा है तो मुझे भी यह विश्वास है कि आप उस विधाय को पूरे संज्ञान में लेते हुए, उस वक्तव्य को वापस ले लेंगे। डॉ. यह बात सही है कि किसी मैगज़ीन ने उसको कोट किया है, जिसको आपने यहां कोट किया है, आपने उसको ऑथेंटिकेट भी किया है। लेकिन आप उस घटना को ऑथेंटिकेट नहीं कर रहे हैं, क्योंकि उसकी सत्यता आपके पास नहीं है। हमारा आपसे आग्रह है कि इस पूरे बयान को आप वापस लें, ताकि सदन की कार्यवाही ठंग से चल सके।

श्री मोहम्मद सलीम (रायगंज) : उपाध्यक्ष महोदय, इसमें मेरी स्पष्ट बात यह है कि मैं जो बयान दे रहा हूँ, उसके ऊपर यदि संसदीय कार्य राज्य मंत्री यह कहें कि जब तक इसको आप वापस नहीं लेते, तब तक सदन की कार्यवाही नहीं चलने देंगे। ... (व्यवधान) यह भी सदनशीलता का एक अभाव है, जिस मुद्दे पर हम बात कर रहे हैं। ... (व्यवधान) मैंने पहले भी कहा और अभी भी कह रहा

Sir, for your benefit, when I quoted from *Frontline*, why I said that? I am sorry, I quoted from *Outlook*. I am giving undue advantage to *Frontline* also. It is because they asked me from where I was quoting this. I said this is the article. I authenticated that. Now, this is ridiculous that the Minister is saying that as long as I cannot prove the truth, no further proceedings will continue. How come? I cannot. What I said was, I quoted and I put it. Now, if the Minister says, no, then it is up to the Minister and the Government of India. With their own might, let them take action. How can I? As a reader, I purchased the magazine. I read it and I quoted it. I have the right. Now if there is anything wrong, let him take action....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Mr. Salim, what the Parliamentary Affairs Minister is telling is, whether you are withdrawing that statement or not. That is, he wants you to withdraw whatever you said.

SHRI MOHAMMAD SALIM: How can I? The Speaker has already given the ruling. Now after the ruling, if somebody else is giving a ruling, I cannot abide by every ruling. I only abide by the ruling of the Chair. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Anyhow, the House will be adjourned up to 2.30 p.m. I will adjourn the House till 2.30 p.m. and then we will continue.

14.10 hours

*The Lok Sabha then adjourned till
Thirty Minutes past Fourteen of the Clock.*

14.30 hours

*The Lok Sabha re-assembled at Thirty Minutes
Past Fourteen of the Clock.*

(Hon. Deputy Speaker *in the Chair*)

श्री गणेश सिंह (सतना) : उपाध्यक्ष जी, जो विधायक अभी इसके पहले माननीय संसदीय कार्य राज्य मंत्री जी ने उठाया था कि माननीय सदस्य ने जो बोला था, वह उसे वापस ले लें। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें तो क्षमा भी मांगनी चाहिए, बहुत असत्य आरोप उन्होंने लगाए हैं। मैं उनसे यह आग्रह करूँगा।

DR. KIRIT SOMAIYA (MUMBAI NORTH EAST): Sir, I have a Point of Order. Rules 352 and 353, which the hon. Member has referred to clearly and categorically state that he should not have made such type of a statement without verifying, without authenticating and without issuing notice. It is because during lunch time when I went home I saw that all TV channels were flashing Md. Salim's statement, which is derogatory for the country क्योंकि उन्होंने गृह मंत्री के खिलाफ इस प्रकार का आरोप लगाया है। उन्होंने यह गलत काम किया है। उनको माफी मांगनी चाहिए...(*व्यवधान*)

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Deputy-Speaker, Sir, I would like to refer to Rule 349. Clause (i) of Rule 349 says:

"Whilst the House is sitting, a Member shall not read any book, newspaper or letter except in connection with the business of the House."

Here, Md. Salim has quoted the name of the magazine 'Outlook'. He has not made any allegation. He has only quoted it as per clause 349 (i). There is no defamatory statement on his part. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: It is alright.

...(*Interruptions*)

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Please let me complete. ...(*Interruptions*) I also like to refer to Rule 352 (ii) which is essentially in connection with the discussion of the matter pending before the House. Definitely, he can do it. ...(*Interruptions*) So, no defamatory statement has been made on his part. He only made a quotation that is fully in consonance with the Rules and Procedures of this House. ...(*Interruptions*)

SHRI P.P. CHAUDHARY (PALI): Hon. Deputy-Speaker, Sir, he has not only quoted that but thereafter he relied upon that. That is the whole thing. Quoting of passage from a magazine is a different thing but after quoting he said that this is the state of affairs and asked the hon. Minister to make a statement on the matter. So, he relied upon that. So, Hon. Member, Shri Premachandran's saying that he only quoted it is wrong. He not only quoted it but relied upon it....(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Trivedi ji, do you want to say something?

...(*Interruptions*)

SHRI DINESH TRIVEDI (BARRACKPUR): Sir, I am just wondering whether we have tolerance to accept whatever is being said. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please quote the Rule. Do you want to quote any Rule?

...(*Interruptions*)

SHRI DINESH TRIVEDI: I am afraid and very sad that this also is a reflection of intolerance.

HON. DEPUTY SPEAKER: If you want to say anything, please quote the specific rule.

...(Interruptions)

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजीव प्रताप रूडी): महोदय, बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की स्पीकर साहिबा ने अध्यक्षता की और विपक्ष की तरफ से, सभी पार्टियों की तरफ से कहा गया कि सरकार इस मोशन पर विमर्श करने के लिए चर्चा स्वीकार करे। हमने इसे सहमत स्वीकार किया और कहा कि आप जैसे, जहाँ, जिस समय चर्चा कराना चाहें कराएं और आज जीरो ऑवर भी छोड़कर, 377 भी ले करकर इस बहस की चर्चा शुरू की। मुझे लगता है कि यह करुणाकरण जी की बहस थी, उन्होंने मोहम्मद सलीम जी को अवसर दिया और हमने भी स्वीकार किया। यहाँ तक कि हम एक कदम और आगे गए, कांग्रेस के वक्ता, हमारे मित्र बोलना चाहते थे, हमने कहा कि हम दूसरा स्पीकर नहीं बनेंगे, कांग्रेस को भी हम अनुमति देंगे कि आप पूरा तोड़ते हुए दूसरे स्पीकर बन जाएं। तीसरा भारतीय जनता पार्टी की तरफ से होगा। यह सब कुछ हम लोग बड़े आराम से स्वीकार करते गए। उसके बाद जिस वक्तव्य में किसी एक टिप्पणी का आधार बनाते हुए हमने यह नहीं कहा कि आप गलत हैं या सही हैं, आपने उस कागज़ पर, जो कि एक पत्रिका का कागज़ था, उस पर ऑब्जेक्ट किया, लेकिन कहीं भी आपने उस आरोप को भी ऑब्जेक्ट किया है या नहीं, वह सच है या नहीं, गृह मंत्री ने स्वयं उठकर यह बात कही कि यह गलत है। मैं समझता हूँ और माननीय सदस्य भी इस बात से सहमत होंगे कि जब उनके पास तथ्यों का आधार नहीं है, उन्होंने किसी पत्रिका को वोट किया है तो सहज ही उस स्टेटमेंट को विद्वान कर लेते और कहते कि मेरी मंशा नहीं थी, अगर वह गलत है तो मैं विद्वान कर रहा हूँ। उसके बाद यदि आवश्यकता हो तो वह आज भी सदन की संपत्ति है। आज की तारीख में यदि वे उस वक्तव्य से सहमत नहीं हैं और हमें लगा कि हम पर आघात हुआ है, गृह मंत्री ने एक ऐसा बयान दिया कि देश के किसी भी गृह मंत्री को उस पद पर बने रहने का अधिकार नहीं है अगर इस प्रकार का उनका बयान हो। वैसी स्थिति में हमारी तरफ से कोई ऐसा बयान नहीं है जो कन्फ्रंटेशन का है। हम माननीय सदस्य मोहम्मद सलीम से आग्रह करेंगे कि आप कृपया इस वक्तव्य को विद्वान कर लें ताकि सदन को हम चला सकें और यदि इसमें सत्यता होगी तो आप समझे कि देश के गृह मंत्री ने क्या कहा है। देश के गृह मंत्री ने कहा कि इसमें अगर एक अंश भी सत्यता हो तो जैसे व्यक्ति को देश के गृह मंत्री की कुर्सी पर रहने का अधिकार नहीं है। इतने बड़े बयान के बाद भी अगर माननीय सदस्य इस पर सहमति व्यक्त नहीं कर रहे, ...(व्यवधान) और हम बहुत आग्रहपूर्वक कहना चाहेंगे कि हम सब उनके साथ हैं, उस विचार पर चर्चा सुनने के लिए साथ हैं, कहीं किसी प्रकार का ऐसा विचार नहीं है, एक छोटे से आग्रह में, जिसको पूरा देश देख रहा है, एक बयान, जिस पर हमारी आपत्ति है, गृह मंत्री की आपत्ति है, उस पर भी अगर वे इस बात पर टिके रहें तो हम पूरी की पूरी परंपरा की अवहेलना करेंगे।

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): Sir, unnecessarily it is being rewinded and rewinded. स्पीकर महोदय ने कहा - 'pause and proceed'. Instead of pausing, I admitted that you pause that portion and let us proceed with the debate.

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Salim, that is not the rule.

SHRI MOHAMMAD SALIM : What you are saying is that 'unless you do this, we will not allow it to proceed.' This is unfortunate. ...(Interruptions)

SHRI M. VEERAPPA MOILY (CHIKKABALLAPUR): Mr. Deputy Speaker, Sir, I have been there in the forenoon session and also heard Salimji and hon. Home Minister.

HON. DEPUTY SPEAKER: If you want to quote any rule, you do it.

SHRI M. VEERAPPA MOILY : No. I am just telling that there is nothing; it is only the emotions which are driving the proceedings of the House today.

Hon. Member Salimji has quoted from the *Outlook* magazine. The question is whether he is authorized to withdraw the statement which appears in the *Outlook*. ...(Interruptions) If he is authorized or he obtains some authorization, then he can withdraw.

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Moily, that is not the issue now.

SHRI M. VEERAPPA MOILY: The issue is of withdrawing it. I am not raising it unnecessarily. The only question is if he withdraws, the matter will not end because it is there on record. ...(Interruptions) I am telling you that I am helping the House to resolve the question. ...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Venugopal, do you want to say anything?

SHRI M. VEERAPPA MOILY: Sir, let me complete it. I have not completed yet.

Hon. Home Minister, of course, naturally out of emotions said that 'if I were to be the Home Minister, I would not have given the statement.'

HON. DEPUTY SPEAKER: No, that is different. That is not relevant.

SHRI M. VEERAPPA MOILY: It is relevant. That means to say that the House is surcharged by emotions. ...(Interruptions)

Sir, it has appeared in the magazine. If the Home Minister says that he has not given that statement and he disowns the statement, that is the end of the matter. Where is the question of hon. Member withdrawing it? I do not understand the logic of asking the hon. Minister to withdraw it when the Home Minister can rise and say that he disowns the statement.

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Hon. Deputy Speaker, Sir, hon. Member Shri Salim only quoted a statement which appeared in the *Outlook* as per Rules 349 and 352. The rule allows him to quote a magazine.

HON. DEPUTY SPEAKER: That is alright.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, I have a point. Already the hon. Speaker has given a ruling. Government is imposing another ruling.

SHRIMATI MEENAKASHI LEKHI (NEW DELHI): Hon. Deputy Speaker, Sir, a statement has been made by a senior Member in this House against or accusing the Home Minister of making a particular statement and he has relied upon that. That is to begin with.

The second part is that an unauthenticated and unverified statement cited to be made by the Home Minister is written in a magazine which has not been authenticated by the hon. Member. When the Home Minister has made the statement in the House and has disowned it, as Shri Veerappa Moily said, then, to keep that statement on record, of an unverified statement, is incorrect and improper because the sanctity of this House is far greater than a journalist sitting elsewhere, who is quoting things from nowhere. It is the sanctity of this House which is at stake, to begin with, and in my opinion, this is a case of privilege motion to be brought against not only the Member but also the journalist.

HON. DEPUTY-SPEAKER: Mr. Salim, do you have to say anything against what the Minister has said?

SHRI MOHAMMAD SALIM : To whom should I respond, Sir? Should I respond to you, Sir, or to the Minister, or to the Member who wanted a privilege

motion?

HON. DEPUTY-SPEAKER: You may respond to what the Parliamentary Affairs Minister has said.

SHRI MOHAMMAD SALIM : Please help me, Sir. ...(*Interruptions*)

श्री हुकुम सिंह (कैरना) : मान्यवर, आज जिस प्रकार से एक सम्मानित सदस्य ने माननीय गृह मंत्री पर गम्भीर आरोप लगाये हैं और बिना पुष्टि के आरोप लगाये हैं, बिना प्रमाण के आरोप लगाये हैं और जब उन आरोपों को गृह मंत्री जी ने चुनौती दी तो उन्होंने एक मैगजीन को कोट किया कि इसमें यह अंश छपा हुआ है। मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ कि यह आरोप ऐसा है, जिस समय से... (व्यवधान) मान्यवर, मैं बस खत्म कर रहा हूँ। मेरा भी विशेषाधिकार हनन का नोटिस है, माननीय सदस्य के खिलाफ भी और एडीटर के खिलाफ भी, उस पर गौर किया जाये और दोनों में नियमों के अन्तर्गत कार्रवाई की जाये, वरना सदन का कोई मतलब नहीं रहेगा, जो जिसकी मर्जी आएगी, वह बोलेगा। जिसकी जो मर्जी आएगी, वह आरोप लगाएगा। इस आरोप-प्रत्यारोप को रोकने के लिए अब एक ऐसी चुनौती की घड़ी आई है कि आप अनुशासन को कायम रखने के लिए इन दोनों के खिलाफ मेरे नोटिस को स्वीकार करें और सदन उनके खिलाफ कार्रवाई करें।

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): Sir, such an important issue is not being discussed. 'Intolerance' is the most important subject. It appears to me that both the CPM and the BJP have decided not to allow the discussion to go further. Something is being said from here and they are opposing it from there. All the other political parties which have something to submit over here are not being allowed to proceed further. Thus, it is leading to some sort of conclusion. Therefore, if both the CPM and the BJP are in connivance, I would request that it should be withdrawn and the House should run. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY-SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 3.15 p.m.

14.43 hours

*The Lok Sabha then adjourned till
Fifteen Minutes past Fifteen of the Clock.*

15.16 hours

*The Lok Sabha re-assembled at Sixteen Minutes past
Fifteen of the Clock.*

(Hon. Deputy Speaker *in the Chair*)

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): Sir, allow me to continue. I am not going back to that. I am not going back from my words. What I have spoken, I have spoken. Let the Speaker take a decision. ...(*Interruptions*) I go by the ruling. She said: "You pause. Do not put it on the record." I quoted in response to that because of authenticity and so many things. I am a Member, a private Member. I cannot go and enquire. Let the Government do that. Let the Secretariat do that. I go by the rules. I have not made any allegations. I have no qualms personally with Shri Rajnath Singh. In fact, I would have been happy if instead of Shri Modiji, Shri Rajnath Singh would have been the Prime Minister. ...(*Interruptions*) क्या उसे भी बोलना मना है?... (व्यवधान) क्या मेरी यह इच्छा नहीं हो सकती?... (व्यवधान) क्या आप इतने असहिष्णु हो जाएंगे?... (व्यवधान) क्या मैं एक नागरिक के रूप में बात नहीं कर सकता?... (व्यवधान)

शहरी विकास मंत्री, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री एम. वैकेर्या नायडू) : कम्युनिस्ट वार्तों के हाथों में आ जाए, तो कभी कुछ होता नहीं। इसलिए लोगों ने इन्हें दिया नहीं। मेरा कहना इतना ही है कि a Member made an allegation which has been contested. Rules are there. Let the Chair go through the rules, give a ruling and then move forward. That should be the thing. If somebody says that it would have been better if Shri Karunakaran would have become the General Secretary instead of Shri Sitaram Yechury. It would be like that only. Let us not get into that unnecessarily. You go by the rules and give your rulings. ...(*Interruptions*)

HON. DEPUTY SPEAKER: The House stands adjourned to meet at 4.00 p.m.

15.18 hours

The Lok Sabha then adjourned till Sixteen of the Clock.

16.01 hours

*The Lok Sabha re-assembled at One Minute past
Sixteen of the Clock.*

(Hon. Speaker *in the Chair*)

RULING BY THE SPEAKER

HON. SPEAKER: Hon. Members, during the discussion under rule 193 on the situation arising out of incidents of intolerance in the country, Shri Mohammad Salim made certain allegations against the hon. Home Minister. I have heard the submissions made by Shri Bhartruhari Mahtab and other Members also in this regard. Under the provisions of rule 353 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, no allegation by a Member may be made unless an adequate notice has been given. After due consideration, I find that the statements by Shri Mohammad Salim have been made without giving advance notice. Therefore, the remarks of Shri Mohammad Salim shall not form part of the proceedings.

माननीय अध्यक्ष : एक और बात आप सभी को बतानी है कि इसको केवल दो घंटे एलॉट हुए हैं। तो प्लीज बी ब्रीफ।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: At least I must suggest.

...(Interruptions)

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Our Members also have to speak. ...(Interruptions)

HON. SPEAKER: You know it better.

...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : चलाइए न। आप एकदम क्यों खड़े होते हैं?

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैंने आपको 72 मिनट के लिए भी नहीं रोका।

â€¦(व्यवधान)

PROF. SAUGATA ROY : We should also get time. Every time, we are not getting time to speak. ...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : अभी नहीं। आप भी बोलेंगे। मैंने किसी को बोलने के लिए मना नहीं किया। मैंने कहा कि समय का थोड़ा ध्यान रखें, थोड़ा शार्ट।

â€¦(व्यवधान)

PROF. SAUGATA ROY: Our Members also want to speak. ...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आपने तो अभी शुरूआत ही नहीं की। क्यों विशेष करते हैं?

â€¦(व्यवधान)

PROF. SAUGATA ROY: I want a clarification. ...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आपको मालूम है कि दो घंटे यानी दो घंटे।

â€¦(व्यवधान)

PROF. SAUGATA ROY : I want a simple clarification. You just said what Shri Salim said about the Home Minister will not form part of the proceedings. Are you expunging it under rule 380 or using any other rule? Please tell us about it because if a Member's speech is to be expunged it can only be done mentioning the rule. ...(Interruptions)

HON. SPEAKER: About that only I told you. It is there.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: How can I remove the whole of his speech? मैंने एल्लिगेशन की जब बात कही है, तो वही बात हो गई। सौगत राय जी, पूरी स्पीच कैसे करेंगी?

...(Interruptions)

PROF. SAUGATA ROY: I am asking, for even this part of the speech, are you using rule 380? ...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : जहां-जहां ऐसे एल्लिगेशन बार-बार अगर आए हों तो पूरा चला जाएगा। You know it better than me.

...(Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम (ययगंज) : अरुण शौरी जी, अपने इंटरव्यू में बोले, हमारे फार्मर मिनिस्टर एनडीए की वाजपेयी जी की सरकार में मंत्री रहे हैं। ... (व्यवधान) ठीक है, उनकी बात मैं नहीं करूंगा। हबीब जालिब के एक सेर का मिसरा है। ... (व्यवधान) तुमसे पहले वो जो एक शरूख यहां तख्त नहीं था, उसको भी अपने खुदा होने पे इतना ही यकीन था, जितना हमारी माननीय सदस्या यकीन कर रही हैं। ... (व्यवधान)

मैंडम, मैं चर्चा चाह रहा था। हमारे लोग चर्चा चाह रहे थे। ... (व्यवधान) मैं लोक सभा की प्रोसीडिंग से कोट कर सकता हूँ। ... (व्यवधान) मैं राज्य सभा की नहीं करूंगा। आप फिर उठेंगे, रूट्स बतायेंगे। मैं लोक सभा की बात करूंगा। दिनांक 11.06.2014, आदरणीय प्रधानमंत्री जी आपको एड्रेस करके बोले हैं। मैं बाकी चीजों की तरफ नहीं जाऊंगा। वह बहुत अच्छा स्पीच था, जब वह

प्रधानमंत्री बने थे। "1200 साल की गुलामी मानसिकता हमें परेशान कर रही है। बहुत बार हम से थोड़ा ऊँचा व्यक्ति मिले तो सर ऊँचा करके बात करने की हमारी ताकत नहीं होती। दो सौ साल आदिवासी से लेकर, चापेकर बर्डर्स से लेकर, भगत सिंह, अशफ़ाकुल्ला, चन्द्रशेखर आजाद से लेकर, खुदीराम, कन्हाई लाल तक फांसी की सूली पर चढ़ गये लेकिन अंग्रेज शासन से, कोलिनयल शासन से आंस से आंस मिला कर बात करने की कोशिश की, उन्होंने कभी सर नहीं झुकाये।"

उसके लिए हमें गर्व है। अल्लूरी सीताराम राजू हों, मैं सभी का नाम नहीं बोलूंगा, पूरे देश के हर प्रान्त में, मणिपुर से लेकर केरल तक...(व्यवधान)

श्री निशिकान्त दुबे (गोड्डा) : मोहम्मद सलीम साहब, इसमें गलत क्या है? यह सबको पता है। ... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : कबीर का दोहा है। कबीर का दोहा सुनिए।... (व्यवधान)

"मेरा तेरा मनवा कैसे एक छोई रे,

तू कहता कागज की तेखी,

मैं कहता आंखों की देखी।"

पिछले कई महीनों से जो पूरे देश में हो रहा है, मैं उसका वर्णन नहीं कर रहा हूँ, बल्कि हकीकत सामने है और आपके नेतागण भी उसको मान रहे हैं। ... (व्यवधान) मैं किसी कि नाम नहीं ले रहा हूँ।

माननीय अध्यक्ष : आप उनके प्रश्नों का जवाब नहीं दीजिए, आप अपनी बात सदन में रखें।

श्री मोहम्मद सलीम : वहाँ 1984 में जो सिखों के साथ जो हुआ तो देश ने उसे सहन किया। यूपीए-वन के समय में जब नानावती कमीशन की रिपोर्ट आयी, मनमोहन सिंह जी प्रधानमंत्री थे, फिर से कानून लागू हो, उसका पालन हो, रिपोर्ट की सिफारिश लागू हो, क्या उसकी चर्चा नहीं हुई? आप कोई भी पाप करो और कहें कि पहले वाले ने भी पाप किया था तो पाप का सितसिला चलता रहेगा। वह कहीं न कहीं तो थमेगा।... (व्यवधान) अन्याय आप करें या मैं करूँ, अन्याय, अन्याय है। ... (व्यवधान) मैं तो यह कह रहा हूँ। ... (व्यवधान) यह किम्मत रखें। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बैठे-बैठे कमेंट्स नहीं करें।

â€! (व्यवधान)

श्री मोहम्मद सलीम : मैं बचपन में स्कूल में पढ़ता था तो अक्सर यह गीत गाया जाता था। यह कविता है -

"हैं धरोमेते धीर,

हैं करोमेते धीर,

हैं उन्नतशीन नहीं भय।"

धर्म में धीर हो, कर्म में धीर हो, तब तुम्हें कोई भय नहीं होगा, तब तुम्हारा सर ऊंचा होगा। Where head is held high the mind is without fear. लेकिन आज परिवर्तन क्या हुआ है। वयो ऐसा सुनना पड़ रहा है? अब कह रहे हैं, हौ धर्म में धीर और कर्म में धीर, तो उससे हमारे देश का सर नीचा हो रहा है, हम सर ऊंचा करके नहीं रह सकते हैं। यह नहीं है कि प्रधानमंत्री जी कहें कि हमारा सर 1200 साल से नीचा था। ... (व्यवधान) इसलिए मैंने कहा कि राजनाथ सिंह जी प्रधानमंत्री जी को पसंद करते हैं, क्योंकि उन्होंने 33 प्रतिशत डिसकाउंट दिए।... (व्यवधान) अगर नहीं बोले हैं तो ठीक है।... (व्यवधान) यह सिलेबस में है।... (व्यवधान) यह आपको पढ़ाया जाता है कि एक हजार साल की गुलामी।... (व्यवधान) उसके बारे में चाय की दुकानों में, रास्ते पर बात की जाती है। ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing, except whatever Shri Mohammad Salim says, will go on record.

...(Interruptions)â€! □

श्री मोहम्मद सलीम : मैडम, सुप्रीम कोर्ट के जस्टीस ठाकुर और कुरियन ने क्या कहा? जब जैन समुदाय ने डी मीट बैंक के बारे में कहा। उन्होंने कहा कि यह मुद्दा नहीं बन सकता है। किसी का खाद्य पदार्थ मुद्दा नहीं बन सकते हैं। सबको अपना-अपना धर्म पालन करना है, प्रधानमंत्री जी ने भी यह कहा है। सबका अधिकार संविधान सिद्ध अधिकार है। हमें धर्म से वैर नहीं है। सबको अपने-अपने अधिकार हैं। अगर आप एक के ऊपर दूसरे को लादेंगे, आप पूरे विश्व में देशिए, चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई धर्म हो, अगर हम उस धर्म को सॉफ्ट से हार्ड बनाना चाहते हैं कि हम बहुत सहन कर लिये, अब हम सहन नहीं करेंगे, तो यह बुनियादी सवाल है। अफगानिस्तान में क्या हुआ? वहां सॉफ्ट इस्लाम था। तालिबान और मुजाहिदीन आकर बोलें कि सॉफ्ट इस्लाम से काम नहीं होगा, हार्ड इस्लाम से काम होगा पूरे विश्व में मदद मिली। बामियान जो गांधार शिल्प कला के दिग्दर्शन थे, बौद्ध मूर्ति को तोड़ दिया गया। क्या उससे अफगानिस्तान का भला हुआ, इस्लाम का भला हुआ, धर्म का भला हुआ? हम क्या करना चाह रहे हैं। इस्लाम से उसका विरोध नहीं था, बौद्ध मूर्ति थी, लेकिन सॉफ्ट से जो हार्ड रिलीजन हुआ, हमने बहुत सहन कर लिया, अब और सहन नहीं करेंगे, यहां उसका मुजाहिद करने की कोशिश की गई। आज क्या हो रहा है। आज आईसिस की ताकत है। पेशावर के बारे में हमने बात की। इस विश्व में जो भी धर्म को कवच बनाकर अन्याय करने की कोशिश करेंगे, वह अन्याय उसे भी खाक कर देता है।

आप कहते हैं, धर्म नहीं, धर्मनिर्पेक्ष नहीं, पंथ निर्पेक्ष। यहां सदन में बोला गया। प्रधान मंत्री जी ने शुक्रवार को जब भाषण दिया तो कहा कि विश्व के जो जीवित बारह धर्म हैं, वे सब हमारे देश में हैं। अच्छी बात है। सब धर्म, रिलीजन। जब हम कह रहे हैं कि राजनीति से धर्म को अलग कीजिए, आप कह रहे हैं कि पंथ। पंथ अलग-अलग है, कोई शैव्य है, कोई वैष्णव है। राजनाथ सिंह जी ने यहां बताया कि मुसलमानों के 72 फिरके हैं। देश क्या, हम फिरकों से अलग रहेंगे। यह कहीं न कहीं रेंग नम्बर लग रहा है, इस नम्बर को दुरुस्त करना है। सहनशीलता की जो बात हो रही है, मैं उस मुद्दे पर बात कर रहा हूँ। कहीं बुनियादी सोच में खोत है। मैं फिर कह रहा हूँ कि हर सांप्रदायिक तत्व धर्म को कवच बनाते हैं। मैं धर्मनिर्पेक्ष होकर बोल रहा हूँ। आप देशिए बंगलादेश में क्या हो रहा है। यहां कलबुर्गी की हत्या हुई, पन्सारे की हत्या हुई। रेशनल सोच। सवाल हिन्दु-मुसलमान का नहीं है।... (व्यवधान) जिस देश में एक धर्म के सौ फीसदी लोग रहते हैं, वहां भी रेशनल थिंकिंग, लिबरल थिंकिंग के साथ, वैज्ञानिक सोच के साथ दकियानूसी, प्रतिक्रियावादी शक्तियों की तड़ाई होती है। सब जगह, सब धर्म के लोगों की जरूरत नहीं होती। ऐसी सोच के लोग जो हमारे देश को पीछे ले जाना चाहते हैं, देश के लोग इसकी इजाजत नहीं देंगे। जैसे विज्ञान को हम कहते हैं विश्वैत ज्ञान, वैसे ही बिहार का मतलब है विश्वैत हार। जो विश्वैत हार हुई उसे आप समझिए।... (व्यवधान) शतुघन सिन्हा जी समझ रहे हैं, मुस्कुरा रहे हैं। अगर आप पहले उनकी बात समझ लें, ... (व्यवधान) मैं दोष दिवाने की बात कर रहा हूँ। हमारे देश में गौरव है। हजारों सालों से एक संस्कृति बनती है। कोई संस्कृति मंत्री आकर उस संस्कृति को बदल नहीं सकते। आप उन्हें कलाम जी के बारे में इतना कहते हैं, कलाम जी का मकान उन्हें दे दिया। कलाम जी की सोच तो दीजिए। उन्होंने कहा, मैं दोहराना नहीं चाहता, सबको मातृम है। कल्चरल मिनिस्टर, कौन सा कल्चर? अभी बोलेंगे तो कहेंगे अनफाउंडेड चार्जेस।... (व्यवधान) यह वयो हो रहा है, यह आपको समझने की कोशिश करनी है। यह लोकतंत्र का मंदिर है। जब पहले प्रधान मंत्री जी यहां दाखिल हुए तो उन्होंने सिर झुकाया। मंदिर में लोग रोजाना उपासना करते हैं, सिर्फ उद्घाटन के दिन उपासना नहीं करते। लोकतंत्र हमें यह शिक्षा देती है। आजादी की तड़ाई जहोजहद की घरोहर है, जो मुअरसर की तहजीब है, मिक्स्ड संस्कृति है, महासागर की तरह है। मैं कोट नहीं कर रहा हूँ, आप रविन्द्र नाथ जी की कविता जानते हैं। वहां गंगा की धारा कौन है, यमुना की धारा कौन है, नर्मदा की धारा क्या है, गोदावरी क्या है, कावेरी क्या है, ब्रह्मपुत्र क्या है, महासमुद्र में जाकर अलग-अलग धारा को ढूढने से आप पागल हो जाएंगे, धारा नहीं मिलेगी। इस देश की एक धारा है। उतर भारत में गंगा-यमुना तहजीबी है। आप ढूढते रहिए।... (व्यवधान) ये अच्छी बात समझना नहीं

चाहते।...**(व्यवधान)** इस मुअर्रसर की तहजीब को ठेस पहुंच रही है। आजादी की लड़ाई में जिन लोगों ने हिस्सा लिया था, उन्होंने पूर्वोत्तर भारत से पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक इस धारा को मिलाने की कोशिश की थी। जिनका इस धरोहर से कोई सरोकार नहीं है वह इस धारा को तोड़ना चाहते हैं। यह बिल्कुल साफ बात है।

माननीय अध्यक्ष : आप बैठे हुए लोगों की टिप्पणियों पर उत्तर मत दीजिए।

श्री मोहम्मद सलीम : स्वामी विवेकानंद जी, आजकल तो बहुत स्वामी हैं, पूरे भारत का पथिक बनकर जब वह घूमे, वह भारत की आत्मा को समझने की कोशिश किए, जिसको आप कुत्ता कह रहे हैं वह भी हिन्दुस्तानी है, उसका भी अधिकार है, उस दलित को साथ में लेना पड़ेगा, हर पेशे के लोगों का नाम लेकर उन्होंने कहा था कि सब को मेल-बंधन करना पड़ेगा, इसके लिए बिज तैयार करना पड़ेगा, कुछ लोग बनाते हैं और कुछ लोग पुल तोड़ते हैं। यहां पर चर्चा करेंगे तो आप नोक-झोंक करने लगेंगे, आज गांवों में क्या हो रहा है, सड़कों पर क्या हो रहा है, रेलवे स्टेशन पर क्या हो रहा है, चायखाने में क्या हो रहा है, आज लोग बंट रहे हैं, लोगों के दिमाग में जहर घोला जा रहा है, चाहे मुसलमान हो या किश्तियन हों, वे इतनी बड़ी तादाद में हैं उनको आप कहां धकेलेंगे, आप सभी को पाकिस्तान नहीं भेज सकेंगे। पाकिस्तान वह मुल्क नहीं जहां हिन्दुस्तान का मुसलमान जाना चाहता है। अगर ऐसा होता तो सारे लोग 1947 में ही चले जाते, हमने इसे नकारा है, हमारे बाप-दादाओं ने नकारा है, इस जमीन को हमने अपना बनाया है, इस वमन को सिंचा है, आप कहते हैं, यह खाते हैं तो पाकिस्तान चले जाएं, वह बोलते हैं तो पाकिस्तान चले जाएं, नारायण मूर्ति को कहां भेजेंगे, ग्युराम राजन को कहां भेजेंगे ...**(व्यवधान)** शाह्रूख खान, आमिर खान को कहां भेजेंगे, कश्मीरी पंडितों को क्या दे दिए, आप कश्मीर में सरकार बना लिए, मुफ्ती मोहम्मद साईद के साथ जाकर सरकार बना लिया, उनको भी घोखा दे दिया, आप लोगों को बांटते हैं और साथ मिलकर सत्ता हथियाते हो, आप किसकी बात करते हैं, हम लोगों का बंटवारा नहीं चाहते, दिलों का बंटवारा नहीं चाहते, हिन्दु और मुसलमान के नाम पर जंग मत छोड़ो। यदि आपको जंग छोड़ना है तो भूखमारी के खिलाफ जंग छोड़ो, बेरोजगारी के खिलाफ जंग छोड़ो, पिछड़ेपन के खिलाफ जंग छोड़ो, महिलाओं के खिलाफ अन्याय और अत्याचार के खिलाफ जंग छोड़ो, अगर आपमें हिम्मत है, आज भारत के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है उस चुनौती के खिलाफ जंग छोड़ो, हम सब साथ हो सकते हैं। आप लोगों को बांट कर किसकी रोटी सेंक रहे हैं। मनमोहन सिंह जी जब प्रधानमंत्री थे, वह विदेशी दौड़ों में कहते थे कि हमें गर्व है, उस वक्त आईएस नहीं था, हिन्दुस्तान का एक भी मुसलमान नौजवान अलकायदा में रिक्रूट नहीं हुआ, हमें फक़ है। ...**(व्यवधान)** आज जब प्रधानमंत्री विश्व के दूसरे देशों में जाएंगे तो क्या कहेंगे, जो भी जा रहा है वह गलत है, लेकिन उसको गलत रास्ते में खिंचने के लिए देश और विदेश में तत्व है, हमारे सीमा के पार ऐसे तत्व हैं, उनके एजेंट हैं, आप ऐसा कुछ काम मत कीजिए, जिससे उस एजेंट का काम आसान करके उसके कैप में धकेल रहे हो, हम कश्मीर में मिलिटैसी को रोक नहीं पा रहे हैं जबकि वहां 10 लाख की फौज है।

HON. SPEAKER: He is not yielding.

...(Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम : आज फिर से पंजाब जल रहा है, हिन्दु-मुसलमान का सवाल नहीं है, पिछले एक-डेढ़ महीने से जल रहा है, अकालियों को यह सोचना पड़ेगा कि संघ परिवार के साथ मिलकर क्या किया? हमारा सबसे खुबसूरत, सबसे ताकतवार और सबसे देशप्रेमी आजादी की लड़ाई में सबसे ज्यादा खून बहाया, उस पंजाब में आग वरों जल रहा है। यह सवाल हमें पूछना पड़ेगा, धर्म को आश्रित बनाकर राजनीति करने तो उसका नतीजा बहुत ही खराब होगा। मैं बंगाल से आता हूँ, आज ही हमारे क्षेत्र में फसाद का माहौल पैदा कर दिया गया, एक छोटी सी जमीन के टुकड़े को लेकर विवाद हो गया, आज मुर्गा चोरी की छोटी सी घटना भी फसाद का कारण बन सकता है। ...**(व्यवधान)**

HON. SPEAKER: Shri Mohammad Salim, do not answer them.

...(Interruptions)

श्री मोहम्मद सलीम : आप अच्छी बात सुनिए।

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

...(Interruptions) ❏

श्री मोहम्मद सलीम : मैडम, हमारे देश में जो अशोक स्तंभ हैं उसमें सत्यमेव जयते लिखा होता है, कुछ आर्टिस्टों को लेकर जुलूस करने से आप सत को नहीं छुपा सकते। सत्ताई सामने आ रही है। सत्य के ऊपर एक श्लोक है, जो मुण्डक उपनिषद् से लिया गया है। ...**(व्यवधान)** आप सुन लीजिए।

'सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन फन्था विततो देवयानः'

हमारा सँद् धर्म यही है। सत्य की जय होगी और हमारा राजनीतिक दर्शन, बौद्ध, जैन, गांधी तक अहिंसा परमो धर्मा। आज क्या हो रहा है? आज थोड़ा सा एक विकल्प रास्ता देखा गया। अहिंसा परमो धर्मा के 'अ' को उठाकर सत्यमेव जयते के सामने लगाकर आज कहा जा रहा है "असत्यमेव जयते और हिंसा परमो धर्मा।" यह इस देश में नहीं चलेगा।

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Madam Speaker, I would thank you for giving me an opportunity to participate in the discussion on the growing intolerance throughout the country. I think the entire nation is anxiously waiting to hear the fruitful debate and satisfactory action from the Government.

Madam, our country, which always upheld the values of Ahimsa, tolerance and harmony, is going through a period of crisis. The land of Buddha, Ashoka, Akbar and Mahatma Gandhi is now termed as a land of intolerance. There is an unprecedented attack on the people's fundamental right to life, right to eat, right to think; threatening, abusing and killing of people of opposite views have become a daily affair. These are unprecedented events. The reactionary forces in the country have become much courageous doing the politics of hate. The national and the international media are talking about intolerance. Eminent personalities from various fields are talking about intolerance but our Prime Minister is keeping silence. On the other side, his Cabinet colleagues are pouring oil on fire.

Madam Speaker, why has discussion come in? Is it because of political conspiracy? No. Madam Speaker, all the eminent scientists, all the eminent writers, all the eminent historians, they are expressing their serious concern in respect of intolerance in the country....**(Interruptions)** I am telling you that if they are politically motivated, then the Government should stand and say that these people are making political conspiracy against the nation. Here, what is happening? I am quoting the words of complaints from the historians....**(Interruptions)**

SHRI NISHIKANT DUBEY (GODDA): Who are the historians?

SHRI K.C. VENUGOPAL : The historians say this. I will tell you. Do not worry. Differences of opinions are being sought to be settled by using physical violence, arguments are met not with counter arguments but with bullets. These historians, these eminent personalities are not affiliated to any political party. You can see it. These persons, I am telling you, are those who have got the Padma Vibhushan, those who have got the Sahitya

Akademi Awards and they are saying this.

SHRI NISHIKANT DUBEY: Please give the names.

SHRI K.C. VENUGOPAL: I will tell you. Please wait. Some of them have already returned their Awards. Some of them have already resigned from their distinguished posts. Some eminent personalities are expressing their views through the media. Is it a political conspiracy? Being a responsible Member of Parliament representing millions of people, I think it is the duty of us to express our concern on intolerance.

That is what we are doing. ...(*Interruptions*) Why are you people becoming intolerant? I would like to quote Martin Niemoller, a famous German poet. During the Nazi regime, he wrote against the prevailing intolerance in the Nazi Germany. I quote: "First they came for the Socialists, and I did not speak out because I was not a Socialist; then they came for the trade unionist, I did not speak out because I was not a trade unionist; then they came for the Jews, and I did not speak out because I was not a Jew; then, they came for me, and there was no one left to speak for me." This is a clear reminder for everybody, those who are keeping silence on intolerance, especially the Treasury Benches.

Each and every day, Madam, we are hearing stories of intolerance. There are people who are opposing the existence of intolerance in the country and States; there are people who say that there is intolerance always in the country. That is not true. I must tell that, it is only in the last 15 to 16 months we witness a chain of events from different parts of the country with a similar fashion to disturb the secular fabric of the country. People expressing their views are being killed. People were killed for eating what they want. People are getting threatening letters for expressing their differences. What is this? We are living in a country like India. We will have freedom to express what we think. But here everything is questioned. When has it started? This Parliament also witnessed so many things. I am remembering; I am reminding you. When has it started?

Madam, Perumal Murugan, an eminent Tamil novelist, declared to stop writing because of the threat he received for a novel he wrote. We had raised the issue of Perumal Murugan in this Parliament at the time of that incident. It followed a series of incidents. One after another, it all aimed at killing or threatening others who held similar viewpoints. I will list, please hear, Govind Pansare was killed – Mohammed Salim ji has already pointed out – he was an active member of CPI. He had written 21 books; wrote commentaries on social wrongs; and he was against the superstition practices. He was killed on January 26, 2015.

M.M. Kalburgi, the former Vice Chancellor of Hampi University was murdered in Dharwad. ...(*Interruptions*) He was killed for expressing his views only. Narendra Dabholkar was also killed. We can see that. The way of killing in all the three cases is similar. That means, conspirators are the same. Conspirators are Right Wing extremists. They are the same people.

Then, the Dadri incident took place - growing intolerance in the country reaching maximum when Mohammad Akhlaq, a villager from Dadri was beaten to death by a group for consuming beef. People were attacking him based on communally motivated rumours. Interestingly, police had arrested two main accused. One of them is local BJP functionary. ...(*Interruptions*) The Dadri incident was a terrible blot on the nation. It was a terrible blot on the secular values we inherited for centuries. People's liberty to choose their food was targeted there. It is a clear, planned attack. A day after the incident, newspapers reported that the main accused Sangeet Som, a BJP legislator has shares in a beef exporting company. Madam, how can one become the protector and killer of cow at the same time? We cannot understand this? Everyone who believed in the secular values of the country was shocked to hear about these incidents. But no mature statement or remark came from the Government. We expected a remark from the hon. Prime Minister. Our Prime Minister addressed 31 rallies during the Bihar Election campaign, but not even in a single rally did he mention this tragic incident. He tweeted his foreign counterparts on their birthdays. But none of his tweets included this terrible incident. On the next day of this incident, he tweeted birthday wishes to Lata Mangeshkarji. It is good; at the same time, the country was expecting at least a tweet of two words from the hon. Prime Minister for condemning this terrible incident, but it never happened.

Madam, it was only a warning. We are all shocked to hear similar news following this incident. In a similar fashion, a truck driver named Zahid Ahmad Bhat from Anantnag, Kashmir was burnt to death by a mob for allegedly killing cow. He was a prey to politics of hate and intolerance. Interestingly, the officials said after forensic tests that the cow had died due to food poisoning and the rumours of slaughter were spread to create communal tension in Hindu majority area. Who made this conspiracy?

Before this incident, in Kashmir we saw a legislator named Engineer Rashid was assaulted by BJP legislators for holding a beef party. It was an attempt to kill the member, that too inside the House. After a day, he was again attacked by right wing groups in Delhi who blacked his face with Mobil oil.

Madam, the hon. Home Minister is here. The Delhi Police, which comes under him, raided Kerala House Canteen for allegedly serving beef. It was a gross violation of federalism also. Kerala House is not a private restaurant. It is a property under the Government of Kerala. Without making any communication with authorities concerned or the Government, the Delhi Police acted in an autocratic manner. The hon. Chief Minister of Kerala wrote a letter to the Prime Minister on 27.10.2015. I have a specific question. Who has got the authority to search a restaurant? I would like to know whether the police have the authority. According to the Delhi Agricultural Cattle Preservation Act, 1994, Section 11 (1) (2) says:

"For the purpose of enforcing the provisions of this Act, the Competent Authority or the Veterinary Officer in writing in this behalf, shall have powers to enter and inspect any premises within the local limits of his jurisdiction where he has reason to believe that an offence under this Act has been or is being or is likely to be committed. The power of entry, search and seizure of premises suspected of containing slaughtered meat of agricultural cattle can only be conducted by the Competent Authority, that is, the Veterinary Officer and there should be notice in writing to exercise the power."

Under Section 11 (4) of this Act, the Police Officer's powers are confined to stopping and searching of any vehicle used or intended to be used for the export of agricultural cattle. The Police Officer's powers are confined to the search of vehicle only and not premises. But what happened here? On 26.10.2015, a PCR Van of the Delhi Police reached the Main Gate of Kerala House at about 2.15 p.m. along with two Sub-Inspectors. The Security Guard posted at the Main Gate asked about the purpose of the visit from the Delhi Police. They were told that a complaint was made to them that

there was a quarrel inside the Kerala House. They were allowed to enter the Kerala House after obtaining permission from the reception. ...(*Interruptions*) Frankly speaking, hon. Chief Minister wrote a letter to the hon. Prime Minister on 26.10.2015. So far, no reply has been given by the PMO....(*Interruptions*) It was a Chief Minister who wrote a letter. These are all being done by hearsay. There are a lot of issues in Delhi. A lot of people are being killed everyday. The police acted within ten minutes; 20 police personnel rushed to the Kerala House and raided the canteen. Hon. Rajnath Singh ji, before starting this discussion, you advised us. You should tell what should be done for stopping, for addressing these types of intolerance. What action you have taken against these police personnel so far? If they have any right, what message have you given by this to the country? You have not taken any single action. You are giving *bhasans*; you are giving advices....(*Interruptions*) That itself is against federalism; that itself is against law also. ...(*Interruptions*)

Then, in the commercial capital of the country, Mumbai, Sudheendra Kulkarni, chairman of the Observer Research Foundation in Mumbai and a member of ruling party was assaulted and smeared with ink before the launch of book written by former Pakistan Foreign Minister, Khurshid Mahmud Kasuri. It was a huge blow to the tolerance....(*Interruptions*)

Music has no limits. It comes to our hearts beyond limits. Then, renowned Pakistani ghazal singer Ghulam Ali's concert in Mumbai has been cancelled after objections raised by the Shiv Sena. Hurt by the politics of hate and intolerance, Ghazal Master Ghulam Ali has said that he will not be performing in India. What an unfortunate incident it is!

After this unfortunate incident, International Cricket Council withdrew Pakistan umpire Aleem Dar and commentators Shoaib Akhtar and Wasim Akram from India-South Africa cricket tournament. Intolerance came into the field of sports also. ...(*Interruptions*)

Then, the politics of cow got an ugly turn when in Jaipur, an artist named Siddharth Kararwal was detained by right wing organization for installing a plastic cow in the ongoing art festival. The two artists were released in the afternoon only after the organizers dismantled the installation. This is intolerance.

Then, two children of a dalit family were burnt alive and their parents suffered injuries allegedly after some persons set their house afire while they were sleeping in Sunped village on the outskirts of Delhi. Vaibhav, who was two-and-a-half years old, and his sister, 11-month-old Divya, died after the attackers allegedly poured petrol and set the house ablaze. It was a clear indication of intolerance based on caste discrimination....(*Interruptions*) But, what followed was more unfortunate and more painful. ...(*Interruptions*)

There was an unfortunate casteistic derogatory statement from the Union Minister. Gen. V.K. Singh told that the Government cannot be held responsible for the murder of the two dalit children in Haryana. He reportedly said, and I quote: "If someone throws a stone at a dog, the Government is not responsible." How unfortunate is this! Is this the way of speaking of a Minister? I am asking Hon. Rajnath Singh ji, what should be done. I am seeking your intervention. We are courageously asking you to sack the Minister, Gen. V.K. Singh. Otherwise, you are giving a message to the country that we are promoting intolerance. Are you ready to sack the Minister? We are insisting that you should sack the Minister, Gen. V.K. Singh for his defamatory statement.

Madam Speaker, more than 40 intellectuals and writers have returned literary awards or written open letters to protest the rise in intolerance and the assault on free speech. I have a long list of eminent writers who returned their prestigious awards like Padma Bhushan, Sahitya Academi Awards and other National Awards. When we look at the list of people we will find it is extensively diverse. There are poets, novelists, essayists, drama writers and story writers. They were writing in different languages also. They are never united by any single political affiliation. Around 50 historians including Romila Thapar – I think, you know about him – Irfan Habib, B.D. Chattopadhyaya, Upinder Singh, M.G.S. Narayanan and D.N. Jha, wrote to the hon. President expressing their concern.

Shri Bhargava, a well known scientist of India wrote to the President of India about this intolerance. Filmmakers who have decided to return their National Awards are Dibakar Banerjee, Anand Patwardhan, Paresh Kamdar, Nishtha Jain, Kirti Nakhwa, Harshavardhan Kulkarni, Hari Nair, Rakesh Sharma, Indrani Lahiri and Lipika Singh Darai. Earlier in Pune, two FTII alumni, Pratik Vatsa and Vikrant Pawar also decided to return their Awards.

Actors like Sharukh Khan and Amir Khan expressed their anxiety over growing intolerance. But they received 'intolerant' statements and comments from the people including the Ministers. The reaction to their comments strongly proved the depth of intolerance existing in the country. Amir Khan stated that he has been 'alarmed' by a number of incidents. The Government did not ask him as to what has happened to him. But, on the other side, some people asked him to go to Pakistan. Is this the only one remedy? If somebody questions the Government attitude on intolerance, the only one simple answer is, "Go to Pakistan. Otherwise you are equivalent to Hafiz Sayeed". That is very wrong.

Here you have told as to whom you are talking, and who Raghuram Rajan is. He is the Governor of the Reserve Bank of India. Shri Arun Jaitley ji is not present here now. Referring to the growing intolerance, Raghuram Rajan, India's Reserve Bank Governor has appealed for tolerance of diverse opinions and challenges to established orthodoxies. He also warned that India's long-term economic prospects depend on a climate of intellectual freedom.

Infosys founder N.R. Narayanamurthy said that there is a considerable fear in the minds of minorities, adding that no country can make economic progress unless it removes strife and reassures its minorities.

Madam, hon. President of India, Shri Pranab Mukherjee expressed his concern on growing incidents of intolerance at many instances. He again and again reminded the need for protecting the multiculturalism and pluralism of the country but the Government maintained unfortunate silence.

After a long chain of such incidents and protests, the Government and the Ruling Party is busy in finding political conspiracies behind intolerance. Who made the conspiracies behind these incidents? I would like to say that those who find conspiracy behind these incidents must clarify in front of the nation. We are daring you; you should clarify the conspirators to the nation.

Adding fuel to the fire, members from the Ruling Party including the Ministers, Chief Ministers and Governors were making irresponsible and communal remarks. I am quoting the remark made by the Chief Minister of Haryana 'on beef issue. He said:

"मुस्लिम रहें, लेकिन इस देश में बीफ खाना छोड़ना ही होगा।"

That means, Muslims can live in India if they do not eat beef.

Shri Mahesh Sharma is not here. After the protest of these eminent writers and historians, our Minister of Culture, Shri Mahesh Sharma made a statement. I am quoting him. He said: "You have freedom to write. But if you protest, you should stop writing." What a Minister of Culture, Madam? I would like to remind Mahesh Sharmaji the words of Obama, Modiji's dear friend, Obama: "It is our writers and artists, who hold up mirror to our society reminding us our common purpose and our collective opposition." That is what Obama is telling about the writers. And, our Minister of Culture is telling: "You stop writing if you want to protest." What is this?

The Governor of a State is telling: "Hindustan is for Hindus. Muslims are free to go anywhere." A Governor, a person who is holding a Constitutional position is saying it...(Interruptions)

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (GUWAHATI): No, Madam...(Interruptions) This should be deleted...(Interruptions)

SHRI K.C. VENUGOPAL : I can quote Shri Giriraj Singhji, who later become Minister in the Government. He told the media: "Those opposing Narendra Modi are looking at Pakistan and such people will have place in Pakistan, not in India." This was told by Shri Giriraj Singhji...(Interruptions)

SHRI K.C. VENUGOPAL : What Sadhvi Niranjan Jyoti said, I am not even able to quote (Interruptions)

Another Minister, Shri Mukhtar Abbas Naqvi, on beef issue said: "Those who cannot live without eating beef should go to Pakistan." What is this? A Minister is telling these ugly comments! There is a long list of such ugly remarks, which came out increasingly after the unfortunate Dadri incident.

The Union Finance Minister, Shri Arun Jaitley called the Dadri lynching 'a stray incident'. He has already told that it had been manufactured by somebody. That is what the Finance Minister has told.

Shri Mahesh Sharma told that the Dadri incident is an accident. Sangeet Som and other BJP MLAs, as I have already told, made inflammatory speeches. Sangeet Som said: "If innocents are framed for lynching of a man over beef rumours, befitting reply will be given."...(Interruptions) Sakshi Maharaj has told that he is ready to kill and get killed for cow.

Madam, these are the words uttered by the Ministers and parliamentarians. How can we say that the country is tolerant by doing such things? But unfortunately, no action had been taken on these statements. No strict action was carried out against people who were involved in these acts...(Interruptions)

Our Prime Minister rejected the existence of intolerance in the country in foreign lands. He keeps unjustifiable silence on these issues. Why is the Prime Minister not talking about intolerance in the country? In his 'Mann ki Baat', the Prime Minister talks about our diversity of cultures and religions. The Prime Minister says: "Diversity is the mantra for unity." Then, why does he not stop his Members and the Cabinet colleagues those who are disturbing the tolerance?

The BJP Party President is talking about strong action against people who make irresponsible statements. How can he take action, Madam? What is his statement about Bihar elections? He said: "If BJP loses in Bihar, people will celebrate in Pakistan." (Interruptions) These were the words uttered by the BJP President...(Interruptions) The BJP terribly lost in Bihar. We did not see any celebration in Pakistan. The people of India celebrated the Bihar victory of Maha Gathbandhan.

Like many of the Government policies, we are getting bogus declarations, *bhashans* but not any strong action in this regard. The Government is still busy to find political conspiracy behind every form of protest. They say, these are manufactured protests.

The Finance Minister, Shri Arun Jaitleyji, wrote in his Facebook post that the return of Sahitya Academy Award by several writers following the Dadri lynching incident as a "manufactured paper rebellion". These are the words used by the Finance Minister...(Interruptions) In your terms it is right but in terms of the nation it is a very strong contemplative statement from the Finance Minister. It is clear that there exists a double standard politics, a hypocritic politics. On one side, there is a tall talk of development, progress, harmony and diversity but on the other side, people are creating maximum issues for provoking communal sentiments. This is the double standard politics of the Narendra Modi's Government itself.

There was a deliberate attempt from the Government to communalise and saffronize the cultural centres in the country. After their coming to power, we have repeatedly raised this issue in Parliament. Indian Council of Historical Research (ICHR), Indian Council of Social Science Research (ICSSR), National Book Trust – all eminent institutions were targeted. They were committed to right wing ideologies. The things got into national interest when the Government decided to appoint Mr. Gajendra Chauhan to head FTII. The students of FTII staged a several month long protest but the Government did not listen to their protest. This is the clear proof of deliberate attempt to disrupt our secular fabric. It is clear that the ideology of the Ruling Government is based on the reactionary policies of RSS and other right wing movements. It is based on the notion of Hindu Rashtra. I must remind this House what the ideology of Hindu Rashtra is. Golwalkar ji in his book 'We or Our Nationhood Defined' says:

"At the outset we must bear in mind that so far as 'nation' is concerned, all those who fall outside the fivefold limits of that idea can have no place in national life unless they abandon their differences, adopt the religion, culture and language of the National and completely merge themselves in the National race. So long as they maintain their racial, religious and cultural differences, they cannot but be only foreigners, who may be either friendly or inimical to the nation."

These are the words of Golwalkar ji. The same ideology was applied by the RSS Chief. He recently remarked that India is a Hindu Rashtra. I

must tell in this House that we must differentiate the tolerant Hinduism from intolerant Hindutva.

I really feel proud by reading the speech of Swami Vivekananda delivered at Chicago on the occasion of 400th Anniversary of Columbus' Discovery of America. Swami Vivekananda went there and made a very, very famous speech. I am quoting his words:

"I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance."

Are you following Hinduism by killing the people? Are you going by Hinduism by threatening the people? You are doing politics on communalism. ...(*Interruptions*) You are using Hinduism for your narrow political interests.

Madam, when we got freedom we had two options. One was Hindu Rashtra envisaged by right wing extremists and the other was Secular India. Pandit Jawaharlal Nehru, Sardar Vallabhbhai Patel and Maulana Azad, the founding fathers selected the second one, that is, Secular India. Pandit ji always believed in beauty of unity in diversity. In his maiden speech which he delivered at Red Fort after getting Independence he said:

"People of this country, its beautiful cultures, its languages, the places and the good hearts of Indians make us feel proud that we are born in such a beautiful land. When we have such a beautiful land to live in, then why will not our heart be filled with pride."

That is what Pandit ji talked about India. But during this period, our Government is trying to erase the legacies of Nehru ji also. The same vision was shared by Gandhiji in his dream of Ram Rajya. We were a nation in the making. It was the vision upheld by the Congress during our historic freedom struggle and after Independence.

We must unite against the reactionary forces who attempt to disrupt the peaceful co-existence in the country. We do not need any declarations or speeches. We need actions to stop this intolerance.

HON. SPEAKER: You are speaking very well. Please conclude now.

SHRI K.C. VENUGOPAL : Madam, till date, no serious action was taken against any culprit. The same inaction, that we saw when churches were widely attacked in the country, still exists. The Prime Minister extensively talks about the idea of India which he did last week also, but he did not utter a single word against it. I am totally disappointed by hearing the words of the Prime Minister in this august House in the discussion on the occasion of Constitution Day. He did not utter a single word about intolerance. Why is the Government tolerant towards growing tension in the country? The Prime Minister did not take any action against Shri V.K. Singh who compared the dalit children to dogs. In fact, this inaction from the Government gives courage to these reactionary forces. That is the real thing.

We will have to pay a high price for this silence. I also remind the Government that people will not allow you in this country and give a befitting reply to those who attempt to ruin our nation.

At last, I would like to say that till our last, we will fight against your intolerant moves and attitude. Our diversity in culture, religion and language made our country beautiful. Our Prime Minister repeatedly quoted the idea of India in his speech last week on this diversity. When we lose these values, our country will become a battlefield of rival ideologies. Those who try to disturb this diversity will always be haunted by history. India no longer lives in declarations which trouble it. Our country should not be ruled by fear, but by hope and vision. I will end my speech by quoting our pride, Rabindranath Thakur.

"Where the mind is without fear and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been broken up into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from the depth of truth
Where tireless striving stretches its arms towards perfection
Where the clear stream of reason has not lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father, let my country awake"

Thank you. Jai Hind.

श्रीमती मीनाक्षी लेखी (नई दिल्ली) : माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं कहना चाहती हूँ कि "कभी दूसरों पर तनकीद मत करिये, तनकीद करने से पहले आइना अपने सामने रखिये।"

मैं आप सबके सामने खास तौर पर जो आइना भेजने की बात कह रहे हैं, उन्हें आज आइना दिखाने का ही काम करने जा रही हूँ। जब मो.सलीम साहब बोल रहे थे तो आज जो कुछ वाक्या इस संसद में हुआ, ठीक उसी तरीके की डिबेट देश में शुरू की जा रही है और वही मैं आपके माध्यम से देश को बताना चाहती हूँ कि कहीं पर कोई खबर किसी अखबार, मैगजीन आदि में छपी जाती है और उसके बाद किसी नेता का बयान आता है और उसके ऊपर माहौल को गरमाया जाता है, जो लोग पिछले एक-डेढ़ वॉल से किसी चीज के बिना घूम रहे हैं, जिसके रहते उनके हाथ में सब कुछ होता था, जमाना उनका होता था, इसी वजह से लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार के प्रति असहिष्णुता इनके मन में है और वही असहिष्णुता का माहौल इस देश में बना रहे हैं और ये बातें तथ्यों से साबित होती हैं, क्योंकि मेरे जैसे लोग तथ्यों से हटकर रिटोरिक में नहीं बोलते और तथ्य मैं आपके समक्ष रखना चाहती हूँ। पढ़ला तथ्य जब यह कहा जाता है कि इस देश के अंदर असहिष्णुता का माहौल बढ़ रहा है तो पढ़ला तथ्य है, that according to the Ministry of Home Affairs, a total of 2,715 communal incidents occurred in the country from the year 2011 to 2015 - on an average, about 57 communal incidents per month in last four years.

17.00 hrs.

"and 85 per cent of these incidents occurred in just seven States. All of them were either ruled by the Congress or the non-BJP Parties."

The incidents of communal violence have actually declined during the past 14-18 months because the year 2014 has recorded 644 cases as per information available and this was so stated even in the Rajya Sabha by the Minorities Affairs Minister.

Madam Speaker, numerous writers, film-makers and so-called intellectuals have returned their awards in the past few weeks to protest against the growing intolerance in the country. I am sure that there are a lot of people who are actually worried about this atmosphere, which is sought to be created in this country and who have not returned their awards. According to me, these were probably the rewards for political considerations and not the awards, which were genuinely sought. I would like to assure them that India is not becoming intolerant and there is absolutely no data to support this particular fact. In fact, this entire atmosphere is sought to be created to malign the image of a democratically-elected Government and that is why I call them intellectual mercenaries. They are intellectual mercenaries because they are not concerned about how they are tarnishing the image; how they are affecting the relationships between communities; and how India needs to progress and get ahead on the ground of poverty and fight against poverty.

Our Prime Minister, in whose name a lot of *bhashanbaazi* has happened, Shri Narendra Modi has reiterated his commitment to the holistic development time and again and has spoken out against violence of any kind, and in his rally in Bihar he affirmed his stance on development and need for communal harmony while stating that : "We must decide whether Hindus and Muslims should fight against each other or against poverty. Only peace and goodwill can take this country forward. This is our commitment to the communal harmony of this country", and it is in this stance that repeatedly our Government has maintained '*Sabka Saath Sabka Vikas*'. If people in the Opposition vouch by the Sachar Committee Report, then they should also vouch by the status of Muslims in Gujarat where the then Chief Minister has worked hard for '*Sabka Saath Sabka Vikas*' because these people have run the Government in the British-style of divide and rule. The formula is very simple, that is, divide the majority community into castes and polarize the minority communities in the name of religion and that is exactly what they are working on.

When these people remember and vouch by the Constitution, in the name of Constitution and in the name of law and order of this country and they want to debate cow slaughter in this country! They forgot what the Directive Principles have to state; they forgot how many States in this country allow cow slaughter; and how many States do not allow cow slaughter. This country and this Constitution have given the right to amend even that law.

हिंदुस्तान के अंदर 29 में से, क्योंकि यह डाटा तब का था, जब 30 राज्य नहीं थे, 29 में से 21 राज्य ऐसे हैं, जहां पर काऊ स्लॉटर बैन है और यह तब से बैन है, जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार इस देश में नहीं थी और देश के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी नहीं थे। आंध्र प्रदेश में जो Prohibition of Cow Slaughter and Animal Preservation Act जिस साल में पास हुआ, वह साल सन् 1977 था। वह साल तब था, जब 287 सीटों में से 219 सीटें कांग्रेस के हाथ में थीं और तब कांग्रेस ने यह पास किया था। और तब कांग्रेस ने यह कानून पारित किया। जम्मू और कश्मीर के अन्दर, जब वेणुगोपाल जी बोल रहे थे और मौलाना सलीम साहब कह रहे थे कि उसको काऊ स्लॉटर के लिए असेम्बली के अन्दर धमकी दी, वे भूल गये कि 1932 से उस राज्य का वह कानून है। एक कानून मानने वाला देश, जहां पर संविधान प्रमुख दस्तावेज़ है, वया इस देश में और खास तौर पर जीते हुए प्रतिनिधि लोगों के बीच में यह माहौल बनाना चाहते हैं कि राज्य का कानून भले ही कुछ हो, आप राज्य के कानून को तोड़ें। वया यह देश में एनार्कनी नहीं होगी? आपको अधिकार है, कानून के तहत उस राज्य के कानून को बदलने का हक है और इसी सन्दर्भ में मैं वेणुगोपाल जी की बात का जवाब देना चाहती हूँ कि जब इन्होंने दादरी के इंसीडेंट को बार-बार कोर्ट किया, दादरी के इंसीडेंट में आपको समझना होगा कि हम एक ववासी फैडरल स्ट्रक्चर हैं और उस ववासी फैडरल स्ट्रक्चर के तहत राज्यों के अपने कानून हैं और केन्द्र के अपने कानून हैं। जब राज्यों को प्रमुखता से अपने कानून का पालन करना है, अगर किसी राज्य के अन्दर उस कानून को तोड़ा गया तो वया यह उस सरकार की जिम्मेदारी है या केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है? उस घटना में दो कानूनों का उल्लंघन हुआ, अगर पहला कानून काऊ स्लॉटर को बैन करता है तो वया उस कानून का उल्लंघन होना चाहिए और अगर किसी ने गऊ हत्या की और उस पर लोग भड़के और उसके बाद अगर किसी का मर्डर होता है तो वह मर्डर है। उसको आप सियासत की निगाह से मत देखिये, क्योंकि काऊ स्लॉटर पर ... (व्यवधान) आप बैठिये और सुनने की हिम्मत रखिये। आज मैं आपको इस देश के तथ्य बताना चाहती हूँ कि 2006 में भी काऊ स्लॉटर के ऊपर दंगे हुए थे। 2013 में भी काऊ स्लॉटर के ऊपर दंगे हुए थे, यह भी इस देश का इतिहास है और इस देश के इतिहास के मुताबिक आप किसी की भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। आप चाहते हैं कि काऊ स्लॉटर न हो तो अपने राज्य का कानून बदलिये और यह खास तौर से कांग्रेस के लिए है, जो कर्नाटक के अन्दर लगातार इस तरीके की हरकत कर रही है, वह कर्नाटक के अन्दर इस कानून को बदलने की हिम्मत रखे, बदलकर लेकर आये।

इस देश के अन्दर जब दादरी जैसा हत्याकांड होता है और कानून-व्यवस्था पर शक की निगाह जाती है और देखा जाता है कि पुलिस की कार्यवाही जो होनी चाहिए, वह नहीं हो पाई, नहीं हुई, वहीं पर दिल्ली में उसी हादसे को दोहराने की कोशिश की जाती है और केरल हाउस का इंसीडेंट, जो बार-बार कोर्ट किया तो मैं बताना चाहती हूँ कि केरल हाउस कोई डिप्लोमेटिक एन्वेलव नहीं है, वह कोई और राज्य नहीं है, वह भारत के एक राज्य का हाउस है और उसके मेन्बु के ऊपर वीफ लिखा गया था और वीफ के अन्दर यह तय होगा कि वह वीफ है, गाय का मांस है, किसी और का मांस है, सिर्फ एक फॉरेंसिक जांच के बाद और जब वेणुगोपाल जी ने कोर्ट किया... (व्यवधान) बैठिये साहब, आज आप सुनकर जाइयेगा। आज आप अपनी सदिग्धता दिखाइये। देश आपको भी देख रहा है और मुझे भी देख रहा है, बैठिये और सुनिये। प्रोडिबिशन ऑफ कैटल स्लॉटर एक्ट की जब आप बात करते हैं तो आप आई.पी.सी. और सी.आर.पी.सी. को नहीं छोड़ सकते, क्योंकि आई.पी.सी. के तहत कोई भी ऐसी दुर्घटना, जिसमें कानून व्यवस्था का उल्लंघन हो सकता है, प्रिवेंटिव कस्टडी तक में तेने का पुलिस का अधिकार है और उसका अधिकार प्रोडिबिशन ऑफ कैटल स्लॉटर एक्ट नहीं छीन सकता। आई.पी.सी. और सी.आर.पी.सी. के माध्यम से पुलिस ने कार्यवाही की, वह सही कार्यवाही थी, क्योंकि अगर पुलिस वह कार्यवाही नहीं करती तो दादरी जैसी दुर्घटना इस राज्य में होती और साथ ही यह राज्य का कानून था। जब राज्य के मुख्यमंत्री इस पर राजनीति करते हैं तो मैं उनको कहती हूँ कि अगर इस कानून से आपत्ति है तो इस कानून को बदलकर दिखाइये। आप कानून को बदलिये। यह देश कानून से चलता है। यह देश राज्यों के अधिकार से चलता है और देश केन्द्र के अधिकारों से चलता है। हर बहस को, हर मुद्दे की राजनीति की जा रही है, ताकि कहीं न कहीं आप माइनोंस्ट्री के मन में खौफ पैदा करें। हर चुनाव से पहले इस तरीके का हादसा किया जाता है और हर चुनाव से पहले इस तरीके की बेबुनियादी बातें की जाती हैं... (व्यवधान) I am an independent Member of this House and I will express myself under right to freedom. जो फ्रीडम ऑफ स्पीच की बात करते हैं, मैं उन्हें याद दिलाना चाहती हूँ कि freedom of speech was restricted by the Constitutional Amendment in 1951 by none other than highly reverential Pandit Jawaharlal Nehru. Pandit Nehru restricted freedom of speech because there are always reasonable restrictions on freedom and when people from the Opposition constantly mock and play with the sentiment of the community, then I again cite,

छुरी का, तीर का, तलवार का घाव भरा

लगा जो ज़ख्म ज़बान का, रहा हमेशा दर्द

ये लगातार जो ज़ख्म इस देश की आत्मीयता पर कर रहे हैं, वही दर्द हम लोगों की जुबान से ब्यां हो रहा है... (व्यवधान) वही दर्द कि in the name of secularism, in the name

of tolerance, the kind of humiliation which the majority community and others who are law-abiding citizens of this country, are subjected to. ...(*Interruptions*) बहुत सारे लोगों की अमीरी इस देश की असहिष्णु जनता से हुई है।...(*व्यवधान*) I am coming back to the date of West Bengal and Kerala because two of my friends have quoted certain data. One data is of Kerala in 2010 where Professor T.J. Joseph's hand was chopped off for making a question paper. No award was given at that time. On 1st December 1999, Master Jayakrishna was killed in front of his students at Mokeri East School and it was not less than Kalburgi or Dabholkar's case. In case of Kalburgi and in case of Dabholkar, let me remind my friends that this happened when Congress was in power in those States and now also they continue to be in the State in Karnataka.

Madam Speaker, award wasasi brigade never actually saw the point and the point is actually opposite of what they are protesting for- be it the carnage of Sikhs in 1984, riots at Nellie, Meerut, Hashimpura, Bhagalpur, Maliana or Muzaffarnagar recently. The list just goes on and on. Large scale of communal violence has been engineered by the non-BJP Governments. The Congress, the Left and the Samajwadi Party and all others are very tolerant to all these incidents. Their tolerance is so very well enhanced and spoken about because on one side they wrote about and spoke about Dadri but they do not care to even mention Moodbidri. They do not even care to mention that there is a mafia in this country which is acting against the law of the land and if people complain against them they get killed. ...(*Interruptions*)

This is a law abiding society. How will the Government run? How will the society run? It will run on the basis of the law the Constitution provides. ...(*Interruptions*) I am coming to West Bengal. I will just come to West Bengal also. ...(*Interruptions*) 'Law and order' is a State subject and it is solely the State's responsibility. ...(*Interruptions*) Please show some tolerance to me.

I am going to cite 66A. Remember, you brought in section 66A of the IT Act against people who were making statements and tweets on Twitter. The Press Code was also brought in by the then Prime Minister Shri Rajiv Gandhi. These are all instances of tolerance! ...(*Interruptions*) I am not done.

I personally have a grudge; I am going to make it very personal today. The Shah Commission Report was a Report against the break-down of the law and order machinery and people remember Justice Shah very well. The prosecutor in that case happened to be my father-in-law and the reports were burnt. How those people were haunted! We are personal witnesses to all that. Even the gas cylinders from the houses were taken away; and they talk about tolerance!

They are going to teach tolerance to this side. I am really surprised. The Faridabad incident was quoted by my friends in the name of the *dalits*. Whatever happened earlier and whatever is the law and order situation, a contrary report has already come. I am sure the hon. Home Minister will refer to that. It was a case of personal animosity and that is how those allegations were made because there were FIRs pending against both sides and they had fought against each other over a period of time. ...(*Interruptions*) A case of personal animosity was said to be made into a case of caste violence. I think, there could be no bigger crime than that because you are breaking the fabric of this country. What happened in the Faridabad incident, especially people from Haryana will remember. I can go on and on about Mirchpur, Gohana and at least ten other incidents which have happened in the last four or five years. This is what I have to state on violence. ...(*Interruptions*)

I am not justifying anything. I am the last one to justify anything. It is a law and order issue which is condemnable and strict action has to be taken against anyone who breaks law and order. That is what my statement is. ...(*Interruptions*) I will handle that also. Show patience please.

We have limited time. I have to deal with many arguments and you are violating. ...(*Interruptions*) Violence is not just physical, violence is even verbal; and I can appreciate. Those who twist the statements to mean something which was not stated that is also violence to language; and violence to language needs to be exhibited and needs to be spoken about. ...(*Interruptions*)

People like me will say this country has respect even for dogs because in this country maximum people believe in non-violence. Temperamentally, I have nothing against those who eat non-vegetarian food; absolutely not. It is a personal choice but for most people whether it is a dog or an ant life is precious and life has to be respected; and no violence either to the environment, to the rivers, to the lives and non-living objects needs to be maintained. That is the philosophy of *ahimsa*. And the philosophy of *Ahimsa* seems to be violated when people make such rabid statements. Such rabid statements need to be condemned. Such twisting of the words also needs to be condemned.

Madam, I was going through the records and in the records I came across some comments on Salman Rushdie. Some words have been spoken about Salman Rushdie. His book was banned in eighties. Who was in power at that time I need not say. In 2012 Rushdie was not even allowed to appear in a video conference in Jaipur...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया, वेस्ट बंगाल में वहाँ 1977 से वहाँ 2009 के बीच 55,408 लोग मारे गये। वेस्ट बंगाल में किसका राज था और वे किस तरह के सेवयुलर मर्डर थे, उन पर भी कुछ रौशनी डालनी चाहिए, क्योंकि सेवयुलरिज्म के नाम पर इस देश में मर्डर होते रहेंगे, लोगों को बांटा, काटा, छँटा जायेगा और लोग विकास, पढ़ाई, महिला सुरक्षा, भोजन और मैलन्यूट्रीशन की बात ही नहीं करेंगे, क्योंकि ठीक चुनाव से पहले इस तरह की अखबारों और किताबों में डाली जायेगी और उसके ठीक दो महीने बाद या कुछ समय बाद, जब तक तहकीकात होगी, एक छोटी-सी अपोलोजी आ जायेगी लेकिन तब तक यह मुद्दा भुनाया जा चुका होगा। यह इस देश की असलियत है। इस देश की असलियत है कि भारतीय संविधान के मुताबिक जो ववासि फेडरल स्ट्रक्चर की बात कही थी, उसी ववासि फेडरल स्ट्रक्चर में 13 राज्यों में कांग्रेस पावर में थी, कैंटल स्टॉर्ट्स के खिलाफ जो कानून है, उसे लाया गया। डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स में भी मिल्ज और ड्राउट एनिमल्स के खिलाफ बात कही गयी है। मैं उसके इकोनॉमिक एंगल को मैलन्यूट्रीशन से जोड़ना चाहती हूँ। जब किसी बच्चे को बढ़ती उम्र में स्तुआक की जरूरत होती है, तो उसका जो कैलिशियम-प्रोटीन का पाइमरी सोर्स है, वह गाय, भैंस और मिल्क एनिमल्स का दूध ही रहता है। उसमें धर्म को लेकर कोई डिस्ट्रिक्शन नहीं करता है और वह इकोनॉमी का हिस्सा है कि एक गरीब देश में, जहां पर गरीबी, भुखमरी, मैलन्यूट्रीशन है, भोजन की व्यवस्था अपने-आप में दुआवार है, लगातार परिवार के खेती के प्लॉट साइड छोटे छोटे जा रहे हैं, लगातार उसमें फर्टिलाइजर डालने का खर्चा बढ़ता जा रहा है। क्योंकि बिहार का बार-बार उदाहरण दिया जा रहा था, पुरुआ काम करने के लिए राज्य से बाहर आ जाते हैं और महिलायें वहां बच्चों की देखभाल करने के लिए रह जाती हैं। अगर घर में गाय-भैंस कोई जानवर हो, तो उनके गोबर का इस्तेमाल, गोबर गैस के तुरन्ते के लिए किया जा सकता है और जानवरों से दूध, घी, मक्खन का इंजाम किया जा सकता है। यह सीधे तौर पर एग्रीइकोनॉमी से जुड़ा हुआ पूरुण है। यह मैं नॉन-रिजिजियस, इरिजिजियस लोगों के लिए कह रही हूँ, जो धर्म के आधार पर इस बात को मान्यता देना चाहते हैं, वह धर्म के आधार पर मान्यता दे दें, लेकिन जो धर्म के आधार पर मान्यता नहीं देना चाहते हैं, सोच उनकी कहीं न कहीं एक सुखमय जीवन की है, खास तौर से किसी भी गरीब परिवार के लिए और उसी से जुड़ा हुआ मुद्दा है कि डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स ऑफ स्टेट पॉलिसी, क्योंकि जब संविधान पर भाआण हुआ तो लगातार डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स का जिक्र इस सदन में हुआ। कहा गया कि किस तरीके से वह विजन का डेवलपमेंट है, राज्य को इस दिशा में आगे बढ़ना है। वह कामयाब हो या न हो, लेकिन इस दिशा में हमको आगे बढ़ना है। काउज, मिल्ज एनिमल्स के खिलाफ जो आवाज है, वह हमारे संविधान के डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स में कही गयी है। उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की मृत्यु को अगर उसके धर्म या कम्युनिटी की निगाह से देखा जाता है तो वह बहुत ही सीरियस तॉ एंड आर्डर ईशू है। मैं चाहती हूँ कि यह सदन इस बात को बहुत गंभीरता से सुने। फेल्योर्स को कभी भी कवर करने की कोशिश न करे। कानून-व्यवस्था का उल्लंघन किसी भी ऐसे राज्य के लिए, जो धर्म और संविधान में विश्वास रखता है, वह किसी भी देश के लिए सबसे गलत होगा। अगर असहिष्णु माहौल है तो मैं इस बात से सहमत हूँ कि वह असहिष्णु माहौल वहां पर मौजूद है जो भारत के बहुत नजदीक के कई ऐसे देश

हैं जो कभी भारत का हिस्सा थे। वहां पर चाहे वह अल्पसंख्यकों का गिरता हुआ स्तर हो या संख्या हो, वही अपने आप में बताएगा कि भारत किस तरीके से सडिआणु मुल्क, देश है जिसने लगातार इन बातों को एक साथ रखा, चाहे वह पाकिस्तान का उदाहरण दिया, अफगानिस्तान का उदाहरण दिया, बंगलादेश का उदाहरण दिया। ये तमाम उदाहरण बिल्कुल सही उदाहरण हैं।

मैं एक और बात का जिक्र करना चाहती हूँ और वह इस देश की मान्यताओं, अस्मिताओं का जिक्र है। जब संविधान की बात हुई तो जिक्र आया कि संविधान की शुरुआत आजादी की लड़ाई से होती है। कहीं न कहीं आजादी की लड़ाई उसमें शिपलैवट होती है। मेरा मानना है कि इस देश का इतिहास बहुत पुराना है, बारह सौ वंशों से भी अधिक पुराना है। इस देश के इतिहास में एक परम्परा थी। वह परम्परा यह थी कि जब भी राज्याभिशांक होता था, तो जो भी राजा बनता था, वह मुकुट पहनने के वक्त यह कहता था - अहम् अदंड दोशांक, अदंड दोशांक, अदंड दोशांक यानी मैं सबसे ऊपर हूँ और मेरे से ऊपर और कोई नहीं है। वह तीन बार ऐसे कहता था। लेकिन राज पुरोहित उसके सिर में एक छोटा का डंडा तीन बार मारता था और कहता था - धर्म दंड दोशांक, धर्म दंड दोशांक, धर्म दंड दोशांक यानी आप धर्म से ऊपर नहीं हैं और धर्म आपको भी कंट्रोल करेगा। इस संसद का धर्म यहां का संविधान है। संविधान और कानून का उल्लंघन करना किसी भी राज्य के हित में नहीं हो सकता। लगातार इस देश में जो माहौल बनाया जा रहा है, वह कानून के विरोध में बनाया जा रहा है। जिन विधायकों को, जैसे मैंने कहा अर्मेडमेंट का अधिकार इस संसद के पास है और अर्मेडमेंट का अधिकार किसी राज्य की लैजिस्लेटिव असेम्बली के पास भी है। अगर आपको बहस करनी है और ऐसे किसी मुद्दे पर बहस करनी है, आप कानून-व्यवस्था के तहत उस कानून-व्यवस्था को बदलने के लिए बहस करें और अगर बदल सकते हैं तो उसे बदलें। लिट्टर फैस्टिवल्स में जो लोग जाकर इस पर भाषण करते हैं, उनसे मेरा आग्रह रहेगा कि वे अपने राज्यों को, जो उनकी पार्टी द्वारा शासित राज्य हैं, उन्हें कानून-व्यवस्था को बदलने का आदेश करें। उसी प्रकार एक मुख्य मंत्री जी ने कहा हिन्दी भाषियों को बाहर करें। यह हाल ही की बात है। मुझे लगता है कि जो यहां पर भारत की इंटीग्रिटी, नेशनल इंटीग्रेशन को लेकर भाषण करते हैं, वे कम से कम भाषियों के नाम पर लोगों को बांटने का काम न करें।...**(व्यवधान)**

उसी प्रकार बिहार का उदाहरण बार-बार दिया गया। जब बिहार का उदाहरण बार-बार दिया गया तो बिहार के उदाहरण में बाहरी शब्द का इस्तेमाल हुआ। मुझे लगता है कि एक भारतीय होने के नाते मैं भारतवादी नहीं हूँ। क्योंकि मैं बाहरी नहीं हूँ, ऐसे अपशब्दों का इस्तेमाल करना ही संविधान के खिलाफ है।...**(व्यवधान)** जो लोग लगातार संख्यक और अल्पसंख्यकों के बारे में इस देश में बोलते वते आए हैं।

मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि आपने अल्पसंख्यकों की क्या हालत कर दी, क्या उन्हें आपने मुख्यधारा से काट दिया, क्या उनकी महिलाओं के खिलाफ जब काम हो रहा था तो आपने क्या किया? मैं इसे डंटा के साथ बताना चाहती हूँ, 70 हजार महिलाएं जब आपसे कहती हैं, उनके सामने तीन मुख्य दिक्कतें हैं, पहली मेटेनेस की, दूसरी दिक्कत श्रादी के स्टेटस का, जब देश का सर्वोच्च सर्वोच्च न्यायालय एक कानून-व्यवस्था के तहत एक केस के अंदर जजमेंट देता है और आप मेजोरिटी गर्नमेंट हैं, वह पहला जजमेंट नहीं था उससे पहले भी इस तरह का जजमेंट आ चुका था, यह तीसरा जजमेंट था, ऐसे जजमेंट्स के बाद क्या संसद ने देश के कानून को फेल नहीं किया, जब उन महिलाओं को सेवयुलिज्म के नाम पर जस्टिस नहीं दिया गया, एक कानून लेकर आए जिसमें ऐसे जजमेंट की भी अनदेखी की गई। मैं महिलाओं के नाम पर बोल रही हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि इस देश में सबसे बड़ी अल्पसंख्यक महिलाएं हैं, इस देश की महिलाएं देश के जितने भी सर्वोच्च पद हों, चाहे इकोनॉमिक डाटा हो, चाहे पढ़ाई लिखाई का डाटा हो या न्यूट्रिशन का डाटा हो, सब जगह इनको इन सब चीजों से दूर रखा गया है। उनके साथ हर समाज ने उनके साथ डिस्क्रिमिनेशन किया है।

When it comes to the freedom of expression, I would like to highlight that the Government has banned 35 books throughout the country between 1950 and 2014. As against the 31 books banned by the Congress Government, the only book banned after this Government coming to power was on the orders of a Pune Court. If the banning of books is done to preserve harmony and public order, it can still be justified but instances like the banning of M.O. Mathai's book "The Reminiscence of the Nehru Age", Javier Moro's "The Red Sari", Arthur Koestler's "The Lotus and the Robot" and Salman Rushdie's "The Moor's Last Sigh" show that some bans were inspired to preserve the image of the Nehru-Gandhi dynasty which is something that is purely an act of silencing criticism...**(Interruptions)** It may be available but the Government did order banning. And Nehru by Phulpert was also banned and I want some people to read it.

The Opposition has clearly underestimated the acumen of the people of this country. If they believe that by creating a rhetoric of intolerance, they will succeed in making this country intolerant, the answer is "No". The answer is, we the people believe in logic and reason and it is through logic and reason that they will be defeated and it is through data and statistics that they need to be shown the mirror. आप जो आइना भेजने की बात कह रहे थे, उनको जरूर आइना दिखाया है, मैं चाहूंगा कि वे उस आइने में देखें और अपने गिरेबां में झांककर भी देखें, ...**(व्यवधान)** और यह भी देखें इस देश ने आपको क्या-क्या दिया और आपने सडिआणुता से कैसे-कैसे खिलवाड़ किया...**(व्यवधान)**। Just for securing political agendas, you think shall not be tolerated. मैं आपको दिल्ली का भी बताना चाहती हूँ, जिस तरह बिहार में दादरी इन्सिडेंट को लेकर हुआ ठीक उसी प्रकार दिल्ली चुनाव के ठीक पहले चर्च अटक - चर्च अटक शुरू किया गया और जब तथ्य सामने आए कि चर्च से अधिक मंदिरों पर हुए थे, ...**(व्यवधान)**

लेकिन इस तरीके की हरकतें लगातार देश के ताने-बाने के साथ खिलवाड़ हैं और मैं यही बात भारत के देशवासियों को बताना चाहती हूँ कि आप इस खिलवाड़ का शिकार न हों। आप इस खिलवाड़ का शिकार इसलिए न हों, क्योंकि अगर आप 80 और 90 के दशक को देखेंगे, तो पायेंगे कि उस समय 50 हजार लोग पंजाब में मारे गये और उस समय कौन सी सरकार थी, यह आप सभी जानते हैं। ...**(व्यवधान)** अमृतसर में अभी हाल ही में सो-कोल्ड सरखत खातसा का जलसा हुआ और उस जलसे में स्ट्रेज के ऊपर से खालिस्तान की मांग की गयी। ...**(व्यवधान)** उस समय स्ट्रेज पर कौन-कौन से लोग मौजूद थे, यह मैं कांग्रेस के लोगों से जानना चाहती हूँ। ...**(व्यवधान)** मैं जानना चाहती हूँ कि जब इस तरीके की हरकत हुई, तो उनके प्रदेश के नेतृत्व ने साफ शब्दों में कहा कि इनके खिलाफ कोई एक्शन नहीं होगा। क्या इस देश में जो नेशनल इंटीग्रेशन का भाषण देते हैं, वह अपने आफिस बेयर या एमप्लए से नहीं पूछेंगे कि आपके सामने जब खालिस्तान की मांग की गयी, तो आप वहां क्यों बैठे रहे और आपने उस जलसे में पार्टीसिपेट कैसे किया? ...**(व्यवधान)** इस देश ने खून देखा है। ...**(व्यवधान)** बहुत लोगों के बलिदान के बाद के बाद यह देश और आजादी हमें मिली है। जब राजनीतिज्ञ इन सब विधायकों से देश को भूमित करना चाहते हैं और राज्य के आधार पर इस पर रणनीति बनना चाहते हैं, तो मैं उस राज्य की जनता, इस देश के नागरिकों और उन सब लोगों से, जिन्हें संविधान और कानून में विश्वास है, से कहूंगी कि हाथ जोड़कर करबद आपसे विनती है कि कानून के तहत जो भी उस राज्य का नियम है, कृपा करके उसका पालन कीजिए या उस कानून को बदलने की हिम्मत रखिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री दिनेश त्रिवेदी (बैरकपुर): अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। मैं अपनी पार्टी का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। मुझसे कहा गया कि हमारे पास सिर्फ सात मिनट का समय है और सात मिनट के समय में पता नहीं ...**(व्यवधान)**

माननीय अध्यक्ष : मैं आपको टोक नहीं रही हूँ।

â€! **(व्यवधान)**

श्री दिनेश त्रिवेदी : इस सात मिनट के समय में ऐसे सीरियस मुद्दे पर कहां कैसी बात करें। मगर मैं यह जरूर कहूंगा कि मैं आज थोड़ा सहमा सा हूँ। मुझे भी पार्टियामेंट में बहुत साल हो गये हैं। यह मेरा चौथा टर्म है। जब आईने की बात आ रही थी तब मैं सोच रहा था कि आईना मुझसे वह पढती सी सूत्र मांगे।

मैंडम, वह पढती सी सूत्र क्या थी? यहां गुनाहों का लेखा-जोखा हो गया। आपके गुनाह ये हैं, आपके गुनाह वह हैं और हम बेगुनाह हैं। आज हमने सोचा था कि जो बातचीत होगी, जो बहस होगी और आपने भी बहुत शालीनता के साथ यह दिशा दी थी कि भइया, आप आज जो भी करें, लेकिन इस संसद की गरिमा को थोड़ा नजरअंदाज मत कीजिएगा। मैं इस बात का जिक्र क्यों कर रहा हूँ? मैं इस बात का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ कि पूरा देश देखा रहा है कि आज संसद में इस तरह से या उस तरह से ऐसी बात होगी, दोनों तरफ से एक सुर मिलेगा। कहा गया है कि 'सुर मिले मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा।' मगर कहीं न कहीं मुझे लगता है कि हम थोड़े बेसुरे हो गये। यह आईने का बात आयी है तो देश यह आईना देखा रहा है। जहां टारगैस और इन्टालरेंस की बात आयी है, मैं

समझता था कि इसी विचार पर चर्चा होगी और ऐसे मुद्दों पर बात होगी कि किस प्रकार से, मैं रेल मंत्री रहा हूँ इसलिए रेल का जिक्र करूँगा कि हम जिस पट्टी पर चल रहे हैं, उसी पट्टी पर चलते रहें, मगर डीरल न हो जायें। कहीं न कहीं यह मानकर चलना पड़ेगा, *Something has, perhaps, gone wrong*. वरना इस विचार पर आज चर्चा क्यों करते? *Why are we talking about a subject like being intolerant?* This is a country of Kabir, Mirabai, Tulsidas, Ramanujam, Rahim, Vivekanand, Narsi Mehta, Sri Aurobindo and Tagore. मुझे लगता है कि पूरी रात निकल जाएगी और बात खत्म नहीं होगी। यही है हमारा परिवार, हमारा परिवार इसके सिवाय और कुछ है ही नहीं है। विवेकानंद जी की जब आती थी, सबने कोट किया है, मैं भी थोड़ा कोट करूँगा -

"I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance."

यही है हमारा असली चेहरा। लेकिन कहीं न कहीं आज बहस माइनोरिटी और मेजोरिटी के बारे में हो गई। मुझे नहीं लगता है कि इस पर बहस या चर्चा होनी चाहिए थी। मुझे विंग कमांडर राकेश शर्मा की याद आती है। मैडम, आपको याद होगा विंग कमांडर राकेश शर्मा पहले हिंदुस्तानी थे, जो स्पेस में गए थे। उस समय माननीय इंदिरा गांधी जी प्रधानमंत्री थी, उन्होंने पूछा था - राकेश जी, आपको हिंदुस्तान कैसा लग रहा है, तब विंग कमांडर राकेश जी ने कहा - सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा। यही है हिंदुस्तान की पहचान। हमें यह तय करना है कि हमसे गलती हो रही है या नहीं हो रही है? क्या हम निर्यात पर पहुंचते हैं कि गलती नहीं हो रही है, हम ठीक चल रहे हैं? सबको लाइब्रेरी से दस्तावेज मिलते हैं। जब भी सदन में बहस होती है तब लाइब्रेरी बहुत अच्छी रिसर्व करती है। यदि हम इस रिसर्व पेपर में जाएं तो पाएंगे कि जितने भी साइंटिस्ट्स, इंजीनियर्स, आर्टिस्ट्स कह रहे हैं, अवार्ड वापसी हो रही है तो कहीं न कहीं कुछ है। यदि आमिर खां कुछ कहते हैं तो वह कहते हैं, वह उनकी बात है। अब इसका मतलब यह नहीं है कि हम सबको दूसरे देश भेज दें। यदि दूसरे देश भेजते हैं तो वह भी डायसपोस हो जाते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जाकर उन्हें से मुखातिब होते हैं। यदि सबको पाकिस्तान भेजेंगे तो टू नेशन थ्योरी फिर से वन नेशन थ्योरी बन जाएगी। कितनों को भेजेंगे?

महोदया, चूंकि मेरे पास समय ज्यादा नहीं है इसलिए संक्षेप में मोटी-मोटी बातें कहना चाहता हूँ। आज यदि आमिर खां कुछ कहते हैं तो उसका महत्व कम है लेकिन यदि कोई सांसद कुछ कहता है तो उसका बहुत बड़ा महत्व होता है। हाउस में प्रिविलेज है। आज मैगजीन की बात कही गई कि यदि उसने गलत लिखा है तो प्रिविलेज का मामला बनता है। आज हाउस की गरिमा का सवाल है, आप देखें कि कैसे-कैसे शब्द, अशब्द का उपयोग हाउस के बारे में होता है। मैं उनको जिम्मेदार नहीं ठहराना नहीं चाहता हूँ। अभी कल की ही बात है, दोपहर के करीब दो बजे थे, मैं एफएम रेडियो सुन रहा था। रेडियो जोकी कह रहा था, तमाशा नाम की फिल्म आई है, अगर आपको वह फिल्म देखने बाहर नहीं जाना तो आप टेलीविजन स्क्रीन लीजिए क्योंकि पार्लियामेंट तो सबसे बड़ा तमाशा है। जब यहां आतंकवादियों का हमला हुआ था तब शिवयोरी फोर्सिस ताकत से लड़े और शहीद हुए थे। मैं बहुत से लोगों से सलमत नहीं हूँ, जो कहने लगे थे कि आज संसद में बहुत दुःखद घटना हुई कि एक भी सांसद नहीं मारा गया। यह हमारा रिप्लेवशन है।

इसलिए हमें यह तय करना है कि हम विंगारी से आगे लगाएंगे या आगे को बुझाएंगे? कहते हैं:

"विंगारी कोई भड़के तो सावन उसे बुझाए,

सावन जो अगल लगाए तो उसे कौन बुझाए?"

यह बहुत बड़ा देश है और इस देश पर हम सबको नाज़ है।

मैडम, पूरा विश्व आज तकलीफ में है और उसको रास्ता दिखाने वाला हिंदुस्तान है और हिंदुस्तान यदि कहीं डगमगा गया और इस चक्कर में हम पड़ गये कि यह माइनोरिटी है, यह मेजोरिटी है तथा हिन्दू धर्म एक ऐसा धर्म है जिसे मैं कहता हूँ कि यह फिजिवस, कैमिस्ट्री और मैथ्स है। वह प्योर साइंस है और प्योर साइंस सबको लागू करती है। न्यूटनस थ्योरी एक मज़हब या दूसरे मज़हब को लागू नहीं करती है। सब मज़हब को लागू करती है। इसलिए आपका चाहे स्वच्छ भारत का अभियान हो जो कि बहुत अच्छा अभियान है, लेकिन अभियान तभी सफल होगा जब हमारे विचार स्वच्छ होंगे और इसके लिए बहुत जरूरी है कि हम साथ मिलकर कहीं न कहीं गरीबी के खिलाफ लड़े क्योंकि गरीबी से हम टॉलरेंस नहीं हो सकते।

मैडम, गांधी जी जो टॉलरेंस के एक बहुत बड़े पुजारी थे। उन्होंने अपना 'चौरीचौरा' का आंदोलन स्थगित कर दिया जिसके लिए कितने लोग शहीद हुए। 'चौरीचौरा' का आंदोलन स्थगित इसीलिए किया गया कि 25 सिपाहियों को ज़िंदा जला दिया गया, उन्होंने यह कहते हुए कि मुझे ऐसा आंदोलन नहीं चाहिए जहाँ वॉलेंटेंस हो। हमें कहीं न कहीं सोचना होगा और आपस में मिलकर गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़नी होगी जिसका अभी प्रधान मंत्री जी ने भी जिक्र किया कि ऐसे गरीबी से लड़ाई नहीं हो सकेगी जब हम डिवाइडेड हैं। आज शाम के बाद जब हम घर जाते हैं तो मैजेज क्या जाता है?

Are we united or are we divided? There is nothing wrong. Difference does not mean defiance. In democracy, there has to be difference. Otherwise, there will be a one-party Government. But on certain basic structures like drinking water, like poverty, like law and order, like defence, I do not think there could be any other view than making sure that we fight for it.

Madam, I still have a lot of hope that outside, this country is certainly very tolerant. I will not accept that this country is not tolerant. We had tolerated for years and years and years together a lot of things. We belong to a country of Gandhi. And that is what Mahatma Gandhi had taught us, and a lot of leaders had taught us. I am not going to give a sermon because - उसके काबिल तो मैं नहीं हूँ मगर यह है कि -

"मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर करना,

हिन्दी है हम, वतन है, हिन्दुस्तान हमारा।"

Madam, before you stop me, I again want to thank you very much for giving me this opportunity.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Madam, I start where my predecessor has just stopped. He said, beyond this country it is more peaceful, if I understood him right. Recently, Pope Francis during his visit to Kenya has told, Christian and Muslim leaders at Nairobi that they have little choice but to engage in dialogue to guard against the barbarous, "Islamic Extremist Attacks" and by saying that they have to be prophets of peace. We all know, within last some years, in African continent, most of the Christian community is erecting Jesus Christ in their own colour. They are not European in nature as we see Jesus in our church or in other parts of the world. African Jesus Christ is black in colour. What have we done? Our Christian brothers and sisters have Indianised the Christian sermons, prayers. पूजा पद्धति भी वे लागू कर चुके हैं। वे साड़ी पहन कर चर्च जाते हैं, वे जूता बाहर रखकर चर्च में जाते हैं जो कि पचास साल पहले यहाँ नहीं होता था। They have Indianised the religion, in our own culture, which is a world religion. So, what I am driving at is, culture and religion are two different things and that is where the difference always arose. मैं ऐसा हूँ, वह ऐसा नहीं है और वह मुझसे अलग है। So, he should not sit in my room, he should not be in my village, he should not be here in my State and he should not be here in my country; that is what *Wahabi* culture in the last Century had propagated and that is actually being propagated through Islamic State and which has reached our borders also. But here, I would say one great thing has happened in between. Very recently, the *Mullahs* and the *Maulvis*, thousands of them congregated here and they have given a clarion call against Islamic State. That is how we should respond to the fissiparous activities of those people who want to divide

our society, our country and to those who want to divide our people on fanatic utterances.

There is an orgy of intolerance out there in the world. That is why, very humbly I would say Dineshji, I differ with you. There is an orgy throughout the world. Twitter has made intolerance easy to practise. It has become more effective than shouting and in India, there is a complaint about intolerance from those who, frankly, do not like the change in Government. This had happened in 1977, this had happened in 1989, this had happened in 1998 and this has happened in 2014. Who are reacting? When there is a change of Government, the persons who were the beneficiaries, they feel that they are being ousted; they feel that they are not going to get that much of coveted positions which they were enjoying earlier. That is why, - I may agree, I may not agree – when Morarjibhai became the Prime Minister of this country, he said, 'do away with all these *Padma Shris, Padma Bhushans and Padma Vibhushans*'. I do not know whether this Government is going to do that or not. I am not saying I subscribe to that view either.

SHRI ASADUDDIN OWAISI (HYDERABAD): But you left after Kandhamal.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB: I am coming to that. Thank you for reminding me. At times Asadbhai doubts my intelligence.

SHRI ASADUDDIN OWAISI : I am not; you are very intelligent.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB: Thank you.

But is it only the Government that has changed? That is the greater question. Is it the Government that has only changed that is actually creating this much of turmoil throughout the society, throughout the country? That needs to be discussed.

Madam, there is a new political order in power. There are people who think differently. They do not have the sophistication of the previous elite. They are aggressive in expressing themselves, at times clumsily. These are the people who defend the cow and openly express the doubt whether a section of our population is genuinely is a part of India. But is not there intolerance in every society? Was it not there earlier? Has it increased? I am of the belief that it is a function of deep lying fault lines in our social fabric. It is a result of prejudice for anyone different from us or for someone who does think differently from us. These are fault lines which, over time, for various reasons get plastered over. They never really go away. जैसा कि हमारे Swarashtra (Home) मंत्री जी ने कहा कि सजेसन माने हैं, Political correctness and social etiquette keep this intolerance in check. Take for instance, at the Independence, the United States of America asserted equality of all men but was in denial whether the Union would survive with differences about slavery. After 70 years, there was a civil war not on the question of slavery but whether the Union would survive with differences about slavery. They fought a bloody war. We are in our 69th Independence year. Our founding fathers specially insisted that independent India is not a theocratic State. Yogi Aurobindo had said after partition that this partition line is a myth. It will go away; it will wither away. It cannot survive as a nation, meaning Pakistan. How prophetic these words were! Pakistan is a failed State today. In India, the idea is a Hindu nation with non-Hindu minorities where the State is secular. The State shall not profess, not propagate any religion and be equal to all. In the Constitution,, जो हिन्दी में ट्रान्सलेशन है, उसी में लिखा है, in place of secular, it is 'धर्मनिरपेक्ष'. We may debate, we may discuss, we may not discuss. But the translation was made in Hindi, it was 'धर्मनिरपेक्ष' but the usage is 'धर्मनिरपेक्षता'. In US, the racial fault lines never did go away, though legal measures have ensured that people confined their intolerance, their prejudices, to their homes or perhaps even to their minds. The women's liberation or suffragist movement is another example. Women fighting for their place in society were considered belligerent. The protesting members were beaten by the police. Even today, prejudice against women as equal stakeholders hasn't really gone away. One is yet to see a woman Head of State in the United States of America.

In India, the situation is no better. The prejudices against caste, gender, religion and colour have been deeply embedded in our society and continue to exist today. Even though it is not expressed openly, we know the intolerance towards those whom we believe to be other, not our own. Yet, I would say, it is equally true that many well-meaning Indians are worried and concerned about the socio-political situation in this country.

But, instead of focusing on intolerance which is merely a behavioural manifestation, we need to focus on the underlying cause of those fears and anxieties. That needs to be addressed by those who wield power, who are in charge of administration. Their silence is actually emboldening them and it has created a culture of impunity. This can come to a halt when the powers that be, denounce these elements and strong actions are taken against them. If you are unable to or do not want to remove those from position, at least rebuke them in public. Protect people's right to free speech and save them from violent attacks.

This takes me to a poet of eminence, Jayanta Mahapatra who has written a letter to the hon. President of India.

18.00 hours

He hails from my city Cuttack. This has happened after the election results of Bihar. It has nothing to do with impressing the population of Bihar, the voters of Bihar. He said: 'I desire to return my Padma Shri Award as a small protest against the growing "moral asymmetry" in the country.' That is the word that he has used. He has also said: 'I am already 88 years old. I cannot do much but this is a token protest. I feel writers and poets are no longer first-class citizens in this country. I believe our freedom is being curtailed.' That is what he has said. He expressed his anguish. He also said: 'My protest is not against a particular party. I am much hurt by Dadri issue, Tamil Nadu police arresting Kovan as well as by the utterances of Assam Governor.'

HON. SPEAKER: We will have to complete his speech and the 'zero hour'. If all of you are agreed then, we will extend the time of this House by one hour for completing his speech and thereafter 'zero hour'. We will continue this discussion tomorrow.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

DR. P. VENUGOPAL (TIRUVALLUR): Madam, the hon. Member is propagating wrong information in this House about the arrest of Kovan.

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB : I have quoted what Mr. Jayant Mahapatra has written to the President of India.

HON. SPEAKER: He is quoting Shri Jayant Mahapatra.

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजीव प्रताप रूडी): मैडम, मेरा छोटा सा आग्रह यह है, यह बिल्कुल सही है कि माननीय सदस्य की स्पीच के बाद हम जीसे आवर कर लेते हैं, लेकिन इसकी अवधि का हम बहुत विस्तार कर रहे हैं, कल अगर इसे छोटा रखा जाए, कुछ सदस्यों के बोलने के बाद गृहमंत्री जी का उत्तर कर्वाएँ।

माननीय अध्यक्ष : दिनेश जी को बोलना ही नहीं पड़ा, उन्होंने अपनी बात समय में समाप्त कर ली। मैंने शुरू में ही कहा है।

â€¦(व्यवधान)

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB: Madam, sense of hurt can be gauged from these words of an acclaimed poet who is now in his 88th year.

Some have also mentioned about Amir Khan's utterances. It is his view. Why he chose to say it in a platform, which he did, is his decision but the crux of the matter is that many sensitive Indians do worry about the creeping intolerance in our country. We all have made to feel a bit diminished and the country stands reduced to a very small country. But I believe that this nation is great. It has survived many upheavals. Amir Khan's episode has demonstrated the hollowness that exists. We know there are people who check-in at five-star hotels when there is a power cut or load shedding and they talk about the country's secularism. We also know that NRIs are being placated throughout the world. This is India. It is a changed India. We know fault-line exists, at times plasters peel off and cracks appear. Onus lies on the thinking public especially the Government to nip the evil in the bud before it disrupts peace and harmony. This reminds me the question which Yudhisthir had asked after the war of Mahabharata from Bhishma Pitamah in Shanti-parva.

राजा कालस्य कारणम् या कालः कारणं राजा।

Let us think as about what was the reply of Bhishma during that time. What did Vyasa write? Is it the situation; or is it the people who put the king on the pedestal, on the throne? It is not the Kala who put the king on the throne. It depends on us as to how we should behave and how the Government should behave.

Therefore, I would say that it is for the Government to act, it is for the person who is in power to act. Do not miss a chance when you see that there is some fissiparous activity that is going to occur somewhere.

Here I am reminded of one thing. Recently, the Jammu and Kashmir Government has submitted this before the Supreme Court of India. After all the packages that have been announced and after the new Government came into being, only one Pandit family has returned to the Valley. Is this not demonstrating the amount of intolerance that is prevalent there which is part of our country?

We have a different Resolution to discuss later on if it happens on this Friday. But I am just mentioning only one thing that only one Pandit family has gone back to the Valley. Why? That is a question which every true Indian should ask himself.

Madam, narration of incidents will not bring in any justice. It will only incur rancour and ill feeling in the society and amongst communities. The best thing is to plaster those fault lines.

One suggestion had come earlier from our Party. Shri Satpathy, in the previous Session during the discussion on communal harmony had suggested –I think, this is something which needs to be considered – to have a Communal Harmony Commission. Not necessarily it should be headed by a Judge. It should be a Communal Harmony Commission. Whenever some communal clashes happen, what does the administration do? They bring in the leaders of different communities, put them together and ask them to march together on the streets so that it is demonstrated that we are all one. ...(*Interruptions*) Yes, we can have a Peace Committee.

Why can we not have one Communal Harmony Commission to look into this aspect? Let us not think that it will be another green tribunal or something like that. But here is an idea because now things have changed, things are changing. We are from a Regional Party. We will strive hard to protect our interest relating to the power that has been given to the respective State Government for maintaining law and order. But here is a situation which has manifestations throughout the country because Twitter has come; Facebook has come, and there the respective State Government has very little control. We also believe that it should be independent and it should be free. That is where, I think, this Communal Harmony Commission can play a role. We have to think differently now because new challenges are being put forth before the country and here is a new challenge.

Thank you, Madam.

DR. P. VENUGOPAL: Madam, the entire House should know about the arrest of Kovan and his release. Madam, if you permit, I would like to give a clarification tomorrow morning. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: It is all right. He has quoted it. Yes, you can clarify it tomorrow.

Now, we shall take up 'Zero Hour'.